“ डांस ई कासं
अने नामं ई हासं ”

वातें वाग्धारा नी

विशेषांक दिसंबर 2020 - जनवरी 2021

VAAGDHARA

प्यारे संगठन के भाइयों - बहनों और प्यारे बच्चों
जय गुरु !!

पिछले दिनों जो जनजातीय समागम हुआ और अलग अलग संगठनों और गांवों के लोगो ने अपनी अपनी बातों व समस्याओं को रखा। इसी जनजातीय समागम द्वारा उनकी बातों को सुना व समझा और उनकी समस्याओं का किस तरह समुदाय के द्वारा समाधान किया जा सकता है उस पर चर्चा की क्योंकि जो समस्याएं हमारे सामने होती है वे हमारे द्वारा ही पैदा होती है और उनका समाधान भी हमारे द्वारा ही किया जा सकता है । हमारी परम्परागत संस्कृति, खान – पान,रीती –रिवाजो को अपनाते हुए हमें कैसे आगे बढ़ना है और हमारे जल,जंगल,जमीन,जानवर व बीज के साथ संस्कृति को किस तरह सुरक्षित रखना है ये सारी बाते चर्चा में आई ।
वाग्धारा संस्था इसी पहचान को संरक्षित करने के लिए विगत 2–3 दशकों से प्रयास करती रही है ओर अलग अलग स्वराज संगठनों के माध्यम से इसे मूर्त रूप में लाने की कोशिश कर रही है । वाग्धारा कई वर्षो से जनजातीय समागम का आयोजन करती आ रही है और इस समागम में हजारों तादाद में लोग सम्मिलित होते है, और सम्प्रभुता की सुरक्षा के साथ मृदा संरक्षण की बात करते है । परन्तु इस बार कोरोना महामारी को देखते हुए 11 दिनों से अलग-अलग संगठनों के लोगो ने सामूहिक रूप से किस प्रकार मिट्टी जो की हमारी पहचान है उसकी सुरक्षा कैसे की जाए साथ ही जल, जंगल, जमीन, जानवर व बीज और उसके साथ हमारी संस्कृति किस प्रकार से महत्वपूर्ण है उसको लेकर चर्चा की गई । और उस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए 1000 गांवों में समस्त स्वराज संगठनों के प्रतिनिधि पहुचें और जनजातीय समुदाय के साथ मृदा संरक्षण की शपथ लेते हुए कई कार्य हुए साथ ही हलमा जैसे कार्यों को प्रोत्साहन दिया वही हर वर्ष हम वृक्षारोपण करेंगे जिससे हमारी मिट्टी का कटाव न हो इसकी शपथ ली ।
हमारा स्थानीय बीज पशुधन सुरक्षित रहे, हमारे देशी बीजों का संरक्षण करे हमारी परम्परागत सब्जियां,भाजियां,फल और अनाज को हम फिर से उगाये और उसे खाने के काम में लेने के साथ उसके महत्व को भी समझे। हमारी कृषि के परम्परागत तरीकों को अपनाये जल संरक्षण करे इन्ही सभी बातों को लेकर 5 दिसम्बर को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर सभी 1000 गांवों में धरती माता की आरती के साथ मिट्टी पूजन किया गया जहां एक इंच मिट्टी के बनने में हजारों वर्ष लग जाते वही उसे हवा व पानी के साथ बहने में कुछ ही समय लगता है । अगर हमें मिट्टी को बचाना है तो हमें हमारे देशी तरीकों को अपनातें हुए मिट्टी संरक्षण करना होगा ।
साथ ही साथ इस समागम के आयोजन में जाना की लोगो का मानना है की सरकार कुछ दे या न दे परन्तु ऐसा कुछ करे ऐसी नीतियाँ बनाए जिससे हमारी पहचान जो की मिट्टी है वह नष्ट न हो ओर हमारी संस्कृति को नुकसान न पहुचें । जिसमे जैव विविधता संरक्षण,देशी बीजों को पुनः उगाना ,पशुपालन करना , वानिकी पौधों को बचाना और हमारे क्षेत्र में कृषि की कीमत पर ओधोगिकरण ना हो इस प्रकार की बातें समुदाय ने रखी ।
इसी के साथ समुदाय के विचारों को वाग्धारा संस्था ने जाना ओर उन विचारों को अमल में लाने के लिए समुदाय को प्रेरित भी किया उन्हें समागम के दौरान बताया गया की सच्चा स्वराज क्या है ? हम जो हमारी संस्कृति में नयापन ला रहे है वह सच्चा स्वराज नहीं है उसके लिए हमें अपनी मिट्टी परम्परागत साधनों,कृषि के तरीको, देशी बीज, देशी कीटनाशक, पारम्परिक रीती रिवाज,सब्जियों, भाजियों व फलों के साथ हमारी संस्कृति का संरक्षण करते हुए उसे काम में लेना होगा तभी हम हमारे सच्चे स्वराज की परिकल्पना को साकार कर पाएंगे ।
मेरी बात को समाप्त करने से पहले आप सभी स्वराज संगठनों के साथियों प्यारे बच्चों को नववर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएं इस आशा किरण के साथ देना चाहूँगा की नववर्ष बीते वर्ष की भांति कोरोना महामारी व उस जैसी अन्य महामारियों से अछुता रहे एवं इस नववर्ष में आप सभी सपरिवार स्वस्थ रहें ।
साथ ही अंत में आप सभी से यह भी निवेदन करना चाहूँगा की नववर्ष प्रारम्भ के साथ हम कुछ नया सोचें, कुछ नया प्रण करे एवं हमारे समुदाय के विकास के प्रति दृढसंकल्पित हो अन्यथा यह सभी शुभकामनाएं हमारे लिए एक मात्रा औपचारिकता का विषय ही बनकर रह जाएँगी ।

!! धन्यवाद !!
आपका अपना - जयेश जोशी
वाग्धारा, कुपड़ा, बांसवाड़ा

कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता समागम 2020-2021

भारत के केन्द्र में स्थित जनजातीय क्षेत्र में समुदाय के साथ कार्यरत वाग्धारा एक सामाजिक विकास संस्था हैं जो क्षैत्र में जनजातीय समाज कि सम्प्रभुता और टिकाऊ विकास के अपने सपनो को साकार करने के लिए कई कार्यक्रमो और परियोजनाओं के माध्यम से कार्यरत हैं। इन कार्यकमो में महत्वपूर्ण है जनजातीय समुदाय कि मांग को विभिन्न स्तरो तक सफलतापूर्वक ले जाना और इसके लिए एक प्रभावी कार्य है, समुदाय के प्रतिनिधियो को एक ऐसा स्थान प्रदान करना जहा वे बैठकर नीतिगत कार्यो के लिए नीति निर्माताओ से चर्चा कर सके।
विगत वर्षों से जनजातीय संप्रभुता यात्रा समागम का वार्षिक आयोजन किया जा रहा है । आम तौर पर यह आयोजन संगठनात्मक कार्य क्षेत्र के 1000 गांवों के समुदाय और संस्थागत प्रतिनिधियों को आमंत्रित करने के लिए था लेकिन कॉविड 19 के कारण इस वर्ष इस समागम के आयोजन की रणनीति को बदला गया और अपेक्षाकृत कम संस्था में सामुदायिक संस्थानो से लगभग 300 पदाधिकारी आमंत्रित किए गए। कॉविड 19 के कारण जनजातीय संप्रभुता समागम का आयोजन 21 नवंबर से 1 दिसंबर तक वाग्धारा संस्था परिसर कुपडा में रखा गया सभी दिनों के कार्यक्रमों को 2 दिनों के तीन भागों में विभाजित किया गया था कोरोना संक्रमण के खतरे से बचने के लिए सामुदायिक संस्था के केवल 80 से 100 सदस्यों को 2-2 दिनों के लिए इस आयोजन में भाग लेने का मौका मिला। जिसमें सामाजिक समूहों के साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा के मापदंड व उचित स्वच्छता रखने की विशेष व्यवस्था की गई। इसी के साथ इस बार जनजातीय संप्रभुता समागम के आयोजन का उद्देश्य था कि जनजातीय समाज के अगुवा जन अपने सामूहिक विषयों पर सामूहिक चर्चा कर सकें और उन्हें अन्य सरोकारीयो से साझा करके अपने लिए नीतिगत बदलाव की वकालत करने की दिशा में प्रभावी कदम उठा सके। वाग्धारा एक ऐसा अवसर प्रदान करती है जिसमें जनजातीय विकास की संस्थाएं, नीति निर्माता, शिक्षा विद नीतिगत कार्य को समर्पित व्यक्ति और संस्थान जनसंचार प्रतिनिधि और अन्य सरोकारी साथ मिलकर एक कार्यक्रम तैयार करें जो जनजातीय समुदाय के लिए उनकी परंपराओं और संस्कृति को प्रभावित किए बिना उन्हें विकास की मुख्य धारा में लाने का कार्य कर सके। इसी के साथ इस आयोजन में संस्था द्वारा भविष्य की रणनीति भी तैयार की गई।
साथ ही जनजातीय संप्रभुता समागम में बैठक व्यवस्था कोविड-19 की पालना करते हुए कुछ इस तरह से की गई कि इसी सभी JSS सदस्य को प्रत्येक समूह में 10-10 सदस्यों को 8 समूहों में विभाजित किया गया जहां पुरुष और महिला सहजकर्ता के दो समूह को अलग' अलग बनाया गया था प्रत्येक समूह को दो समूह की भागीदारी की सुविधा के लिए एक कोच द्वारा साहयता प्रदान की गई। वाग्धारा परिसर में स्थित महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित कर जनजातीय संप्रभुता समागम के आयोजन का उद्घाटन किया गया। इस वर्ष समागम समारोह में आस्था संस्थान के श्री भवर सिंह जी को मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया जिन्होंने महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया इस आयोजन में वाग्धारा के सचिव श्री जयेश जोशी जनजातीय स्वराज संगठन सदस्य और परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

इसी के साथ आस्था संस्था से आए श्री भंवर सिंह जी ने अपने भाषण में कहा कि संगठन की सबसे नीचे कि ईकाई कौन सी है हमारा गांव राजस्व गांव वहां हमारा संगठन जहां महिला और पुरुष साथ बैठकर गांव में हमारी किस तरह की जरूरत है, क्या बदलाव हो रहा है, क्या नहीं हो रहा, उसकी चर्चा वहीं पर बैठकर संगठन करता है।
10-15 गांव मिलकर गांव का यूनिट बनता है वहां पर एक मंच तैयार करें 10-15 गांव में हर 2 महीने में वहां मिलना शुरू कर दे वहां पर सभी अपना अनुभव बांटे आपस में और इस अनुभव को तहसील जिले स्तर पर साझा करके एक मंच तैयार कर सकते है। तो यही जनजातीय संगठन का संप्रभुता का आयोजन है वही आगे जाकर एक बड़ा संगठन रूप ले सकता है और इसको चलाने वाले हर एक गांव ईकाई के प्रतिनिधि इस के संचालनकर्ता बने और उसमें वाग्धारा की जो भूमिका है वह यह है कि वह अपने ईकाई के प्रतिनिधि को आगे लाने में मदद करेगी संगठन जो चलाना है ईकाई के प्रतिनिधि को चलाना है यानी कि जो नेतृत्व करता है उसे चलाना है, उसका संयोजन ईकाई का होगा, हम उसमें संयोजक मंडल बना सकते हैं कमेटी बना सकते हैं यह हमारे ऊपर निर्भर है अगर हम कलेक्टर को या एसडीएम को ज्ञापन देने जाते हैं वहां हमारी पहचान एक संगठन के नाम पर होनी चाहिए। जिसमें वाग्धारा का सहयोग हो जाएगा और हमारा जो संगठन है जनजातीय स्वराज संगठन उसकी पहचान हो जाएगी जिले स्तर या राज्य स्तर पर जो हमने जनजाति क्षेत्र में संप्रभुता की बात कही है जो सरकार भी कह रही है आत्मनिर्भर भारत हो आत्मनिर्भर भारत कब बनेगा जब गांव आत्मनिर्भर बनेंगे
तभी भारत भी आत्मनिर्भर बनेगा तो संप्रभुता मतलब हमारे काम का शासन हम चलाएंगे हमारे गांव का कामकाज कायदे कानून हम खुद चलाएंगे हमारे गांव के झगड़े विवाद हम निपटा देंगे जो परंपरा से निपटाते आ रहे हैं हमारे गांव हमारे आदिवासी इलाके की संस्कृति जो खत्म हो रही है उसको हम बचाएंगे और हमारा गांव आने वाले सालों में कैसा होगा इसका निर्माण और सोच हमारे गांव में तैयार करेंगे तभी तो संप्रभुता की बात आएगी।
संप्रभुता बहुत बड़ा शब्द है संप्रभुता कैसे आएगी इसके बारे में सोचना पड़ेगा गांव-गांव से सोचे एक ईकाई से सोचे और पूरे जिले लेवल की ईकाई में हमारा संगठन बने और संगठन कि पहचान जिले लेवल में अलग से बने। जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग कि अलग-अलग ईकाई से प्रतिनिधि आने चाहिए हर गांव या हर ईकाई से प्रतिनिधि होना चाहिए उसमें एक महिला एक पुरुष उस ईकाई के प्रतिनिधि होने चाहिए उसमें मेंबर हो ईकाई लेवल से 4-4 मेंबर हो फिर जिला लेवल पर नंबर तय करें इसमें एक ढांचा खड़ा कर सके और उसकी हर महीने में मीटिंग करें और उसकी पहचान बिल्कुल अलग हो । हमारे कार्य क्या होंगे यह उस पर लिखना होगा और तय करना होगा कि हमारा संगठन क्या काम करेगा जिससे संगठन हमारे काम का तरीका निकालेगा और फिर उसके संचालन के लिए एक-दो साल निकाले। वाग्धारा संस्था संगठन का सहयोग करेगी धीरे-धीरे यह स्थिति आ जाएगी कि संगठन मजबूत होता चला जाएगा और जो भी निर्णय लेना हो वह संस्था ले संस्था 1000 गांव में आज काम कर रही है हो सकता है आने वाले समय में 2000 गांव में और आगे बढ़ सकती है। धीरे-धीरे हम आत्मनिर्भर या संप्रभुता की ओर बढ़े तो संगठन के बढ़ने की बात ईकाई करेगी और जैसे संगठन बना तो लेते हैं पर हमारे सामने खतरे क्या हो सकते हैं यह हमारे लिए सोचनीय विषय है।
संगठन जब चलने लगता है संगठन के जो नेतृत्व करता है वह उभर कर आते हैं अपनी बात करते हैं तब उनके सामने क्या खतरे हैं जैसे पार्टी वाले आदमी होते हैं वह ईकाई के सदस्यों पर नजर तो रखते ही हैं वह एक अच्छे वक्ता बोलने वाले है उसे अपनी और लेना चाहेगा पर उस वक्त हमें हमारे संगठन को बचाने व आगे बढ़ाने के लिए एक ऐसी पार्टी का चुनाव करना है जो हमारे मूल समस्या को उठाएं हमारे जो मूल मुद्दे हैं हमारे जो काम है हमारी संस्कृति को बचाने की बात है हमारे बीजों को बचाने की बात है हमारी खेती को बचाने की बात है जंगल को बचाने की बात है, जो संगठन काम करेगा वही हमारे आदिवासी इलाकों को बचाएंगे और जनजातीयों को भी बचाएगी वो संगठन सबके सामने उस सम्मान के साथ बात करें जैसे स्वराज का मतलब स्वतंत्रता होता है तो स्वतंत्र संगठन जो दबाव का काम कर सकता है और उस दबाव से हम हमारे गांव का विकास कर सकते हैं साथ ही योजनाओं का लाभ भी मिल सकता है जल ,जंगल, जमीन, जानवर,बीज को भी बचा सकते हैं। बच्चों का बाल शोषण नहीं हो, बाल श्रम न हो, यह सारे मुद्दे संगठन अपने गांव सभा में तय कर सकते हैं और संस्था कभी संगठन नहीं बन सकती संस्था का काम है संगठन का समय-समय पर सहयोग करना, जिसमें संगठन संप्रभु स्वराज की बात करें और आगे बढ़े और इसी के साथ संगठन को चलाने के लिए छोटे-छोटे नियम बनाने चाहिए। साथ ही ऐसे व्यक्तियों का चुनाव करें जो संगठन को चलाने के लिए अपना पूरा समय दे वह ईमानदारी से संगठन को चलाएं जिससे संगठन चलता रहेगा तो मुद्दे भी आगे आते रहेंगे।

बीज स्वराज

“अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टमन्तरैव विनश्यति। अबीजकमपि क्षेत्रं केवलं स्थण्डिलं भवेत्।। सुबीजम् सुक्षेत्रे जायते संवर्धते “ - मनुस्मृति
अर्थात अनुपयुक्त भूमि में बीज बोने से बीज नष्ट हो जाता है । अबीज अर्थात गुणवत्ताहीन बीज भी खेत में केवल लाथड़ी बनकर रह जाता है । सुबीज अर्थात अच्छा बीज ही अच्छी भूमि से भरपूर उत्पादन दे सकता ।
भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है, जिसकी अर्थव्यवस्था में कृषि रीढ़ की हड्डी के समान है । हमारे देश प्रदेश में हमारी आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है । हमेशा से और आज भी कृषि उत्पादन में बीजों की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण रही है। बीज खेती की नींव का आधार और मूलमंत्र है। अतः अच्छी गुणवत्ता वाले बीज से, फसलों का भरपूर उत्पादन प्राप्त होता है।
कृषक बन्धु जानते है , कि उत्तम गुणवत्ता वाला बीज सामान्य बीज की अपेक्षा 20 से 25 प्रतिशत अधिक कृषि उपज देता है। अतः शुध्द एवं स्वस्थ बीज अच्छी पैदावार का आधार होता है। शुध्द एवं स्वस्थ बीजों का उपयोग करने से जहां एक ओर अच्छी पैदावार मिलती है वहीं दूसरी ओर समय एवं पैसों की बचत होती है,किसान भाई अगर अशुध्द बीज बोते व तैयार करते हैं तो उन्हे इससे न अच्छी पैदावार मिलती है और न बाजार में अच्छी कीमत । अशुध्द बीज बोने से एक ओर उत्पादन तो कम होता ही है और दूसरी ओर अशुध्द बीज के फलस्वरूप भविष्य के लिए अच्छा बीज प्राप्त नहीं होता है बल्कि अशुध्द बीज के कारण खेत में खरपतवार उगने से नियंत्रण के लिए अधिक पैसा खर्चा करना एवं अन्त में उपज का बाजार भाव कम प्राप्त होता है,जिससे किसानों को अपनी फसल का उचित लाभ नहीं प्राप्त होता है । यदि किसान भाई चाहें कि उनके अनावश्यक खर्चे घटें और अधिक उत्पादन व आय मिले तो उन्हे फसलों के प्रमाणित बीजों का उत्पादन एवं उपयोग करना होगा।
कृषि उत्पादन में बीज का महत्वपूर्ण योगदान है । एक ओर “जैसा बोओगे वैसा काटोगे”यह मर्म किसानों की समझ में आना चाहिए इसलिए अच्छी किस्म के बीजों का उत्पादन जरूरी है । दूसरी ओर सर्व गुणों युक्त उत्तम बीज की कमी रहती है । बीज पौधे का जनक होता है, जो उपयुक्त मौसम में अंकुरित होकर पेड़ पौधों में विकसित होते है । यह बीज कवच से ढका हो तभी वो अनुकूल परिस्थितियों में एक स्वस्थ पौधा देने में समर्थ है, बीज एक आत्मा है जो जल, मिट्टी व हवा के सम्पर्क में आकर पुनः नया जीवन धारण कर लेता है । पौधों को प्रारंभिक पोषण के लिए खाद्य सामग्री की आवश्यकता होती है ।
किसान के लिए तो बीज भगवान है अपना बीज सहज कर रखने की शुरू से ही सभी समाज में परम्परा रही है , जिस किसान के पास अपना बीज नहीं होता उसे हीन भावना से देखा जाता है । आदिकाल में बीज को ख़रीदा व बेचा नहीं जाता था । बीज का आदान प्रदान , उपहार , बीज के बदले सवाया – डेडा अनाज दिए जाने की परम्परा रही है ।
लेकिन हरित क्रांति के दौरान हाईब्रीड बीजों को बढ़ावा दिया गया और बीजो का व्यापार प्रारंभ हो गया । धीरे – धीरे किसान के घर से बीज गायब होने लगा और बीज की सत्ता किसान से व्यापारियों के हाथों में चली गई । बीज एक प्रयोग का विषय बन गया और हाईब्रीड के बाद जीएम बीज आया । किसानों के बीज खोते गए और खेती के मायने बदलने लगे । किसान परिवार आधारित खेती छोड़ बाजार आधारित खेती करने लगा । इससे कृषि जैव विविधता और पोषण सुरक्षा खतरे में आ गई । किसान जो उगाने लगा उसे बाजार में बेच कर ,खाने के लिए बाजार से खरीदने लग गया । जहां घरों में अनाज के भण्डार भरे होते थे उन्ही घरों में सालाना 04 से 05 माह का अनाज बाजार से आने लगा । घरो के आस पास बहुत सारी सब्जियाँ जो प्राकृतिक रूप से उगती है उन्हें भूल गए । खाद्य विविधता के नाम पर केवल मक्का , गेहू और चावल रह गए और किसान की खाद्य संप्रभुता का सत्यनाश हो गया ।
इन सब परेशानियों से पार पाने के लिए वाग्धारा सचिव श्री जयेश जी जोशी ने देशी बीज बचाने हेतु 07 वर्ष पूर्व एक अभियान कि शुरुआत कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता अभियान के रूप में कि जो आज एक विस्तृत रूप लेकर राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश के 1000 गाँवो तक चल रहा है। इससे कृषि जैव विविधता, पोषण सुरक्षा, खाद्य संप्रभुता , बीज विविधता में वृधि हुई है तथा परम्परागत बीज परम्परा को पुनः जीवित करने में काफी हद तक सफल रहे है । इस दौरान किसानो को देशी बीज , पोषण , जैव विविधता , खाद्य विविधता , छोटे अनाज का महत्त्व , पुराना खान - पान , जलवायु परिवर्तन में देशी बीजों का महत्व लोगों को समझाया गया और जागृत किया गया । इन प्रयासों से खेती में पुरानी फसलो को वागड़ की धरा पर पुनः स्थापित करने में मदद मिली । लोगो को अपने परम्परागत बीजों से लगाव हुआ एवं उनका महत्व समझ आया । उन्हें यह समझ आया कि परम्परागत फसले जिनका आविष्कार उनके पूर्वजों ने किया है वह उनकी मिट्टी, वर्षा की अवधि , वातावरण के अनुकूल , खाद्य प्राथमिकता एवं पोषण के आधार पर थी ।
श्री जोशीजी कहते है कि

वागड़ का खेत – वागड़ की फसल ,
वागड़ की खेती – वागड़ का बीज ।
वागड़ का बीज – अपना बीज ,
अपना बीज – अपनी सेहत ।।

कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता समागम -2020 के दौरान वागड़ के परम्परागत बीजों की प्रदर्शनी लगाई गई । इस दौरान सभी 1000 गाँवो से बीज संग्रहण कर हर साल की भांति प्रदर्शित किया गया था जैसे मक्का में 8 से 10 प्रकार की मक्का साठी , गांगडी, पोहटा, तिलड़ी, दुग्ध मोगर , लाल , पिली ,सफ़ेद , मिक्स रंगों वाली देशी आदि । चावल में पाथरिया , कोलम्बो , बीजली , माल कुमुद , काली कुमद , धीमडी, हुतर, जीरा , लाल साल, देशी बासमती आदि । छोटे अनाज में जैसे कुरी , बट्टी , हामली, कांग , माल , चिणा, सामा , राजगिरा ,बावटा, कोदरा ,गुजरो, ज्वार , बाजरा आदि । अन्य अनाज में टुकड़ी गेहू , बाजियां गेहू ,काली उम्बी वाले गेहूँ, लोक वन गेहूँ,जौ , जई आदि तिलहन में मूंगफली , तिल , महुआ , अरण्डी , रतनजोत , सोयाबीन आदि दाल में उड़द, मूंग, कुलत, काला चना , पिला चना , भूरा चना , देशी चना , लाल अरहर , सफ़ेद अरहर , भूरा अरहर , देशी चवला , डॉलर चवला , मसूर , मोठ ,मटर सफ़ेद , मटर हरा , झालोर आदि अन्य सब्जियों में तलवार फली , मोगरी , कोंच की फली , वालोर , पालक , रजन , ठीमडा, कनिजरा, मेथी , लम्बडा, लूणी , पोई , लोफ का साग , करेला झुमकी , तुरई, लोकी , गिलकी, टमाटर ,बैगन, ग्वार,टीन्डोरी, कद्दू ,काकडी,पुवाड, भवरलाट, काचरी, मिर्ची , मथानिया मिर्ची ,प्याज, नानी मरच ,अमर कांदा, कंदा गोला , अरबी , रतालू , शकरगंद , मुली ,गाजर ,चने की भाजी , रजन की भाजी आदि ।
इसके आलावा परम्परागत औषधिया एवं मसाले जैसे गिलोई , सफ़ेद चिरमु, लाल चिरमु , महुआ , अम्बाडी, पत्तरी निम्बू , कल्प वृक्ष का फल ,हल्दी , अदरक , धनिया , राई ,सिन्दूरी , सुबबूल , गुलमोर, कचनार, नील आदि कई प्रकार के बीज आये ।
श्री जोशीजी ने समागम के दौरान तीनो राज्यों से संस्था द्वारा संचालित संगठन के पदाधिकारियों को अपने क्षेत्र में बीज स्वराज को स्थापित करने की जिम्मेदारी दी एवं जनजातीय स्वराज मंच के अध्यक्ष श्री मानसिंह निनामा ने मंच से कहा कि बीज स्वराज को कायम करना हमारे संगठनो का लक्ष्य होगा । बीज स्वराज गाँधी जी के ग्राम स्वराज के सपने को साकार करने में एक कड़ी के रूप में स्थापित होगा । इसी मंच से श्री जोशीजी ने संगठनो से कहा कि बीज नहीं पहचान है , यह हमें वरदान है, और भावी पीढियों का अधिकार है ।
घर का बीज घर में ------फले का बीज फले में ------ गाँव का बीज गाँव में ।
आओ हम करे बीज को व्यापार रहित । इसकी सुरक्षा है --- हमारी जिम्मेदारी ।
हमारी जमीन - हमारे खेत , हमारे बीज हमारे अनाज ।
सच्चे मायने में यही है स्वराज ।।
बीज भावी पीढ़ी / फसल को जन्म देता है तो उसका अधिकार दूसरों के हाथो में कैसे हो सकता है । बीज किसान का हक़ है और किसान के पास ही रहना चाहिए । इसके लिए जरुरी है बीज को सहेजना , बीज का भण्डारण करना , अच्छे बीज की पहचान होना , बीज के प्रति सम्मान होना , बीज संस्कृति को अपनाना , बीज का आदान – प्रदान करना ,बीज परम्परा को पुनः स्थापित करना, गाँवो में बीज बैंक स्थापित कर बीज के प्रति आत्मनिर्भर बनाना ।

सोहन नाथ जोगी
वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक

शेष पेज 2 पर

कृषि स्वराज

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत की लगभग ७० प्रतिशत आबादी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपनी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है । आज के समय में कृषि करने के लिए किसान पूरी तरह बाजार पर निर्भर है और इसका परिणाम यह होता है की किसान की लागत फसल उत्पादन में तय सीमा से अधिक आ जाती है और किसान कर्ज के बोझ तले दबते चले जाते है ।

स्वराज का शाब्दिक अर्थ है - 'स्वशासन' या "अपना राज्य" । गाँधी का मत था स्वराज का अर्थ है जनप्रतिनिधियों द्वारा संचालित ऐसी व्यवस्था जो जन-आवश्यकताओं तथा जन-आकांक्षाओं के अनुरूप हो। यद्यपि गांधीजी का स्वराज का सपना पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया जा सका फिर भी उनके द्वारा स्थापित अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं ने इस दिशा में काफी प्रयास किये और काफी संस्थाए इसकी ओर अभी भी अग्रसर है, जिनमे से एक प्रमुख वागधारा संस्था है । वागधारा संस्था कृषि स्वराज के हित के लिए काम करने वाली स्वयंसेवी संस्था है ।

वागधारा संस्था कृषि स्वराज को सच्ची खेती के माध्यम से बढ़ावा दे रही है । इसी की एक पहल समागम में देखने को मिली । समागम एक वार्षिक कार्यक्रम है जो वागधारा संस्था प्रतिवर्ष जनजातीय समाज के लोगो के लिए करती है, इसमें सच्ची खेती के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी और उन्हें सच्ची खेती करने के विभिन्न तरीको के बारे में जानकारी भी दी गयी ।

जनजातीय समाज में कृषि स्वराज लाने के लिए वागधारा संस्था ने लोगो को सच्ची खेती के आयाम एक मॉडल (प्रारूप) के माध्यम से समझाए, सच्ची खेती के मॉडल से वागधारा की टीम ने मिश्रित फसलो के तरीके और फायदों से जनजातीय समाज के लोगो को अवगत कराया । इस मॉडल में घरेलु स्तर पर सच्ची खेती करने के विभिन्न आयाम बताए गये । इसमें पशुपालन, पोषण वाटिका, मिश्रित फसल, जल संरक्षण के विभिन्न तरीको को बताया गया ।

सच्ची खेती करने के प्रमुख सूत्र है :-

- पशुपालन करना
- जल संरक्षण के लिए मेडबंदी करना
- मिश्रित फसले उगाए
- जैविक खाद (वर्मीकम्पोस्ट) का उपयोग करे
- जैविक दवाइयों का उपयोग करना
- अजोला की खेती करके उसका उपयोग करना
- बीज संरक्षित करके रखना
- खेती में उपयोग होने वाले परंपरागत औजार

कृषि स्वराज के अंतर्गत पशुपालन में लोगो को बताया गया की वो पशुपालन घर को तकनीक के साथ बनाकर अधिक मात्रा में जैविक दवाई में उपयोग करने के लिए गौमूत्र एकत्रित कर सकते है । जनजातीय समाज के लोगो का मानना है की पशुपालन से उन्हें अनेक फायदे है, उन्हें घर में उपयोग करने के लिए दूध,दही उपलब्ध हो जाता है, साथ साथ लोगो ने भी बताया की वो लोग देसी पशुओ का पालन करते है जिससे उन्हें जैविक दवाई और जैविक खाद बनाने के लिए गोबर और गौमूत्र आसानी से उपलब्ध हो जाता है ।

समागम में भाग लेने वाले लोगो को जल संरक्षण करने की सलाह दी गई, उन्हें संस्था में कार्यरत सच्ची खेती के लोगो के द्वारा बताया गया की जल संरक्षण के लिए किसान अपने खेत के आसपास मेडबंदी कर सकते है । मल्चिंग भी मिटटी की नमी बचाने का एक तरीका है, जिसमे मिट्टी की उपरी परत के ऊपर पत्ते या घास डालकर मिट्टी की नमी के वाष्पीकरण की प्रक्रिया को कम किया जा सकता है । इसके साथ साथ लोगो ने ये भी बताया की की वो पानी की सिचाई के लिए एनिकट भी बनाते है ।

इसके साथ साथ संस्था के लोगो द्वारा समागम मे आये हुए लोगो को ये भी बताया गया की वो जैविक खाद और जैविक दवाई का उपयोग करेगे जैविक फसल का उत्पादन करेगे तो उन्हें अच्छी आमदनी होगी । जैविक खाद बनाने के लिए केचुओं का उपयोग करने से अच्छी खाद तैयार होती है, जिसे वर्मीखाद या केचुआ खाद भी कहा जाता है । जैविक फसल उद्पादन के लिए जैविक दवाई का ही उपयोग करना चाहिए जैसे नीमास्त्र, दशपर्णी, वर्मीवाश इत्यादि । जैविक दवाई और जैविक खाद बनाने के लिए किसानो को बाजार पर निर्भर नही रहना पड़ेगा, इसे आसानी से गोबर के उपयोग से घर पर बनाया जा सकता है । ये जानकारी मिलने पर किसानो ने उनके पास उपलब्ध साधनों की जानकारी साझा करते हुए बताया कि वे गड्ढा में खाद बनाते है बिना केचुआ के, और कुछ किसानो के पास वर्मीबेड है तो वो लोग वर्मीखाद बनाते है और फिर उसका उपयोग पोषण वाटिका में करते है । पोषण वाटिका ज्यादातर घरो में लोगो ने वागधारा संस्था के माध्यम से उगाई है ।

इसके साथ साथ समागम में आये हुए जनजातीय समाज के लोगो के साथ बीज संरक्षण के महत्त्व को लेकर भी बात की गई । चर्चा के दौरान लोगो ने बताया की वो बीज का संरक्षण सदियों से करते आये है, उनके पूर्वज बीज संरक्षण कई तरीको से करते थे । वो लोग बीज को सुखाकर उसे कवेलू में नीम की सूखी पत्तियों के साथ संरक्षित करते थे और उनकी ये परम्परा आदिवासी समाज में आज भी जीवित है ।

इस चर्चा के उपरान्त समागम में पधारे लोगो को खेती में प्रयोग होने वाले परंपरागत औजारों से प्रदर्शनी के माध्यम से परिचित कराया गया । प्रदर्शनी के दौरान किसानो ने बताया की अब कुछ किसान ही परंपरागत औजारों का उपयोग करते है जैसे की वीडर, हल इत्यादि । ज्यादातर किसान आजकल ट्रैक्टर पर खेती के लिए निर्भर हो चुके है ।

इसके पश्चात एक अज़ोला का मॉडल दिखाकर लोगो को उसके फायदे और उपयोग के बारे में बताया गया की पशुओ को अज़ोला घास की खुराक देने से उनकी दूध देने की क्ष क्षमता में वृद्धि होती है और साथ ही साथ उनको अज़ोला की खेती की विधि से भी परिचित कराया गया । अज़ोला के मॉडल को लोगो ने खूब सराहा और इसके उत्पादन के लिए, इसके बीज की मांग भी की ।

रिचा राजपूत
कार्यक्रम प्रबंधक कुशलगढ़ ईकाई

कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता समागम 2020-21 में एक साथ उठी आवाज़ "हमारे बच्चें हेतु हमारा सच्चा बाल स्वराज"

वागधारा संस्था विगत चार वर्षों से समुदाय एवं सामुदायिक संगठनों द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर चर्चा करने और जो मुद्दे निकल कर आ रहे है उनके स्थायी समाधान की कार्ययोजना बनाने के उद्देश्य से कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता समागम का आयोजन करती आ रही है । जिसमे समस्त 1000 गाँवो से हजारों की संख्या में आदिवासी समुदाय अपनी भागीदारी निभाता है । इस वर्ष कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए उक्त समागम को छोटे छोटे समूह में 11 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया चर्चा आयोजित की गयी जिसकी शुरुआत 21 नवम्बर से लेकर 1 दिसम्बर तक की गयी, जिसमे सभी 1000 गाँवो से जनजातीय स्वराज संगठनों के पदाधिकारी व सदस्यों सहित, सामुदायिक संसाधन व्यक्ति ने भी अपनी सहभागिता निभाई । जिसमे सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज और सच्चा सच्ची खेती को लेकर जो प्रयास सामुदायिक संगठनों द्वारा गाँवो में किये जा रहे है उनसे अवगत करवातें हुए उन समस्याओं व मुद्दों को भी चर्चा में लायें जो उनको स्थानीय स्तर पर देखने को मिल रही है और चर्चा उपरांत उक्त समस्याओं के स्थानीय व स्थायी समाधान क्या क्या हो सकते हैं उन पर सामूहिक चर्चा की गयी और आगामी वर्ष को लेकर कार्ययोजना का निर्माण किया गया ।

चर्चा में सच्चा बचपन से जुड़े निम्नलिखित मुद्दे निकल कर आए :-

- कोरोना महामारी के कारण विगत 7 माह से सभी विद्यालय बंद है जिससे बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही है ।
- सरकार द्वारा बच्चों को पढ़ाने की जो ऑनलाइन व्यवस्था की गयी है, उसका फायदा ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों को नहीं मिल पा रहा है, क्यूंकि स्थानीय स्तर पर परिवारों के पास मोबाइल फ़ोन और नेटवर्क की समस्या है ।
- ज्यादातर गाँवो में जहाँ विद्यालय है वहां बच्चों के खेलने के लिए खेल मैदान नहीं है जिससे बच्चों को खेलने में असुविधा होती है और बच्चों के विकास के अधिकार का भी हनन हो रहा है ।
- ज्यादातर विद्यालयों में शोचालय नहीं है और जहाँ है वहां सुविधायुक्त नहीं है, जिस कारण बालिकाएँ विद्यालय जाना बीच में ही छोड़ देती है ।
- बच्चों में कम उम्र में ही नशा प्रवृति बढ़ती जा रही है, जिसकी वजह से वह गलत कार्यों में शामिल हो रहे है ।
- विद्यालयों में विषय अध्यापको की कमी होने के कारण बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही है ।
- बहुत से विद्यालयों में कक्षा कक्षों की कमी होने के कारण भी बच्चें विद्यालय जाना छोड़ रहे है ।
- स्कूल और आंगनवाडी के बहुत से भवन जर्जर अवस्था में है जिनकी मरम्मत या भवन को गिराकर नया भवन बनाने की जरुरत है, वरना बारिश के समय में भवन के गिरने की संभावना बनी रहती है जिससे बच्चों की जान को खतरा रहता है ।

चर्चा उपरांत सभी सहभागियों द्वारा प्रदर्शनी विजिट की गयी । जिसमे उक्त मुद्दों और सामुदायिक प्रयासों से मुद्दों के स्थायी समाधान को समझने के लिए समागम के दौरान सच्चा बचपन विषय पर प्रदर्शनी भी लगाई गयी जिसमे भावी पीढ़ी निर्माण में समुदाय की क्या ज़िम्मेदारी होती है उसके बारे में एक मॉडल के माध्यम से सबको अवगत करवाया गया, साथ ही बाल सहभागिता को ध्यान में रखते हुए बाल पंचायत का गठन और उसकी भूमिका के बारे में भी जानकारी प्रदान की गयी । रात्रि में सभी सहभागियों को "स्वदेश नामक फिल्म" का प्रदर्शन किया गया, जिसमें बहुत ही सुंदर तरीके से बाल स्वराज की परिकल्पना को भी दर्शाया गया, की किस प्रकार से बाल शिक्षा की समस्या का समाधान सामुदायिक प्रयासों से किस प्रकार किया गया । साथ ही साथ गाँव के विकास के मुद्दों जैसे बिजली की समस्या, को किस प्रकार समुदाय आगे आकर उसके समाधान के लिए प्रयास करता है उसको भी बहुत ही अच्छे तरीके से दर्शाया गया ।

इसके बाद समूह में चर्चा हुई की अगर उक्त मुद्दों का स्थानीय व स्थायी समाधान चाहिए तो उसके लिए समुदाय स्तर पर कार्य करने वाले सामुदायिक संगठन जैसे ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति, सक्षम समूह, जनजातीय स्वराज संगठन सभी को साथ में मिलकर समेकित प्रयास करने होंगे तभी इनका समाधान स्थानीय स्तर पर किया जा सकता है और इसके लिए हमें किसी बाहरी संस्था या व्यक्ति पर निर्भर नहीं रहना । तभी हम सही मायनों में बाहरी दुनिया के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर पाएँगे ताकि वह भी इनको अपना सके ।

अंत में चर्चा से ही यह निकल कर आया की अगर परिवार, समुदाय, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति और स्वराज संगठन यदि निम्नलिखित कार्यों में अपनी सक्रीय भूमिका निभाएं तो समस्त गाँवो में सच्चा बाल स्वराज को साकार किया जा सकेगा :-

- ग्राम-चोपाल को मजबूत कर अपने गाँव में बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के लिये अपने गाँव को सबसे उपयुक्त स्थान बनायेंगे जिससे वे भी विकास में साथ चलें ।
- हमारे गाँव में प्रत्येक बच्चे जिसमे बिना लडके लडकी के भेदभाव के मानसिक विकास के लिए उम्र अनुसार, आंगनवाड़ी, बालवाडी, माँ-बाड़ी, पाठशाला से जुडाव होगा, कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं होगा व पलायन (दुसरे शहरों में काम पर जाना) को रोकते हुए बच्चों को बालश्रम से मुक्त करवाना ।
- सभी बच्चों का उपयुक्त शारीरिक विकास हो उसके लिए उन्हें सतुलित आहार को ध्यान में रखते हुए गाँव व परिवार आधारित पोषण सुरक्षा कैसे की जाए व पोषण हेतु दुसरों पर निर्भरता किस प्रकार कम की जाए इस हेतु प्रत्येक परिवार प्रयास करेगा ।
- लड़के -लड़की में भेद-भाव नहीं करना, व ना ही होने देना,तथा बाजार के प्रभाव में आकर भ्रूण हत्या जैसी किसी भी गतिविधि को हमारे क्षेत्र में नहीं होने देने के लिए प्रयास करेंगे ।
- बच्चों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए गाँव के सक्रिय युवक -युवतियों को जागरूक करके उन्हें संगठित करना ।
- विद्यालय में बाल मित्र वातावरण बने इसके लिए अध्यापकों के साथ मिलकर वृक्षारोपण, पोषण वाटिका लगाना, मध्यान्ह भोजन में यथा शक्ति सहयोग करना।
- बच्चों में कुपोषण ना हो इसके लिए पोषण विविधता को पुनर्जीवित करने के लिए परंपरागत फसलों की पहचान, बीजो का संग्रहण व उनका प्रसार-प्रचार करेंगे ।
- इस प्रकार से प्रयास करेंगे की वागड़ अंचल में सच्चा बचपन एवं सच्चा स्वराज के माध्यम से बापू के स्वराज की स्थापना हो ।

और साथ ही सभी ने यह भी माना की जनजातीय क्षेत्र के गावों को सम्प्रभुता की दिशा में ले जाने का पहला कदम है गाँव को "बालमित्र बनाना" और इसके लिए गाँव में सच्चा स्वराज स्थापित होना भी अत्यंत आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए सभी सहभागियों ने यह शपथ ली की हम और हमारा समुदाय बच्चों को प्राथमिकता देते हुये उनकी हर बात को ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति में सुनेगा एवं उनके विकास हेतु जिन मुद्दो पर बात होनी चाहिए उसे प्राथमिकता के साथ तय करेगा, साथ ही साथ परिवार स्तर पर एक ऐसे माहोल का निर्माण किया जाएगा, जिसमें बच्चों की सहभागिता बढ़े।

इसके अलावा जनजातीय स्वराज संगठनो द्वारा अपनी ज़िम्मेदारी को समझते हुए अपने कार्यक्षेत्र के समस्त बच्चों के अधिकारो की प्राप्ति हेतु प्रत्येक स्तर पर हर संगठन की भूमिका तय की गयी । ताकि "सच्चा बचपन..सच्चा स्वराज" की परिकल्पना को लेकर संगठन अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करे। संगठन प्रत्येक माह होने वाली मासिक बैठक में प्राथमिकता से बच्चो संबंधी मुद्दो पर चर्चा करेंगे एवं उनकी बातो को सुनकर उन्हे प्राथमिक तादेकर उन समस्याओं के स्थानीय समाधान के लिए समुदाय स्तर पर प्रयास करेंगे जिससे सरकार पर या किसी बाहरी संस्था पर निर्भरता कम हो सके, जिससे की बच्चों के भविष्य को नयी दिशा मिले और हमारे गाँवो में सच्चे स्वराज की स्थापना हो सके।

सच्चा स्वराज व सच्चा बचपन के प्रति प्रत्येक स्तर की भूमिकाः-

अ. ग्राम विकास एवं बाल-अधिकार समिति की भूमिका

- गाँव में वंचित बच्चों की सूची बनाकर उनके लिए कार्ययोजना बनाना और उसको जनजातीय स्वराज संगठन से साँझा करना ।
- हलमा कर गाँव में बच्चों के लिए खेल मैदान का निर्माण करना ।
- विद्यालय प्रबंधन समिति की मासिक बैठक में भागीदारी निभाकर विद्यालय विकास योजना में बच्चों से जुड़े मुद्दों को जुड़वाना ।
- ग्राम चोपाल की बैठको को नियमित कर गाँव के विकास के मुद्दों के बारे में चर्चा कर कार्ययोजना निर्माण करना और उसको क्रियान्वित करना ।
- जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक में भागीदारी निभा कर बच्चों से जुडी समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए चर्चा में लाना ।

ब. सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन) की भूमिका

- प्रत्येक गाँव के विकास स्वयंसेवकों के साथ नियमित चर्चा करके बाल विकास हेतु कार्य करना ।
- ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की मासिक बैठको में ग्राम चोपाल सहभागी सिख अभ्यास के माध्यम से बाल विकास हेतु कार्ययोजना निर्माण कर कार्य निष्पादन में सहयोग करना ।

स. सक्षम समूह की भूमिका

- गाँव में बच्चों के पोषण को सुनश्चित करने के लिए परिवार स्तर पर पोषण बगियाँ का निर्माण करवाना ।
- गाँव में फलें वार गर्भवती एवं धात्री महिलाओं से पोषण को लेकर संवाद आयोजित करना ।
- विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ चर्चा करके विद्यालय स्तर पर मिलने वाले पोषाहार को नियमित करवाना ।
- किशोरी बालिकाओं के साथ उनके स्वास्थ्य व पोषण को लेकर संवाद करना ।

द. स्वराज संगठनों की भूमिका

- अपने कार्यक्षेत्र के समस्त गाँवो कि ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों के साथ मिलकर बाल विकास योजना निर्माण कर क्रियान्वयन करवाना ।
- पंचायत समिति स्तर एवं जिला स्तर पर अधिकारीयों को बच्चों से जुड़े मुद्दों को ज्ञापन के माध्यम से अवगत करवाना ।
- ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों की मासिक बैठको में संगठन के सदस्यों की भागीदारी सुनश्चित करवाना ।
- गाँवो में बाल मित्र वातावरण के लिए ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों के साथ में मिलकर जनजागरूकता के कार्यक्रम आयोजित कर संवाद करना ।

हमारे बच्चे, हमारा समुदाय और हमारी भूमिका यही ध्यान में रखते हुए हमें आगे बढ़ना है,ताकि एक सभ्य समाज का निर्माण हो सके जिससे हम गांधीजी की सच्चे स्वराज की कल्पना को साकार कर सके। ताकि हमारी आने वाली भावी पीढ़ीयों को विकास के सभी अवसर प्राप्त हो और वे अपने, अपने परिवार, अपने समाज, अपने गाँव, अपने क्षेत्र, अपने राज्य, अपने देशऔर अपने विश्व के विकास में भागीदार बन सके।

माजिद खान
प्रोग्राम लीड- बाल अधिकार-वागधारा

समुदाय ने बड़े उत्सुकता से समझी चाइल्डलाइन 1098 की सेवाएं

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वागधारा संस्था के द्वारा जनजातीय समुदाय समागम सम्मेलन 2020 का आयोजन

वागधारा संस्थान कुपड़ा में किया गया। जिसमें जिले के समस्त किसान, समुदाय, युवा, महिला, पुरुष उद्यमी स्वरोजगार महिला समूह इत्यादि कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। जिसमें अलग-अलग ब्लॉक से आए हुए समुदाय के लोगों ने अपने विचारो का आदान-प्रदान किए। साथ ही समुदाय के लोगों के द्वारा जो जानकारियां थी वह जानकारी जिन लोगों को नहीं थी उनको बताई गई |

वागधारा संस्था में इस समागम सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है कि जो वर्तमान में हमारी पीढ़ी पुरानी एवं परंपरागत चीजें हैं संस्कृति हैं धन्न ,धान्य है, बीज है एवं हमारे उपयोग में आने वाली पुरानी परम्परागत वस्तुओं को दिन-ब-दिन भूलते जा रहे हैं तो उन्हें किस प्रकार से पुनर्जीवित किया जाए उसको लेकर समागम सम्मेलन का आयोजन किया जाता है साथ ही । सच्चा स्वराज, सच्चा बचपन एवं सच्चे लोकतंत्र की परिकल्पना को साकार करना है जिसमें हर ब्लॉक से आए हुए प्रतिभागी इसमें भाग लेते हैं तथा अपने जीवन काल में किए गए कार्यों को सबके सामने रखा जाता है वर्तमान की परिकल्पना करें तो इस बार यह देखा गया कि कोविड-19 के चलते किस प्रकार से इस आयोजन को सफल बनाया जाए इसको लेकर वागधारा संस्थान के श्री जयेश जोशी द्वारा पहले से यह व्यवस्था की गई कि सभी लोग अपनी टीमों में आठ से 10 ग्रुपों में बैठे हुए होंगे सभी लोग मास्क एवं सेनेटाईजेर का उपयोग करेंगे साथ ही साथ मास्क को बांधकर बैठेंगे एवं उचित दूरी बनाए रखते हुए समागम सम्मेलन का आयोजन किया गया समागम सम्मेलन में सबसे पहले अतिथियों का वागधारा संस्थान के द्वारा स्वागत किया गया। बताना चाहते हैं कि वागधारा संस्थान के द्वारा अप्रैल 2015 से लेकर अब तक चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 की सेवाएं संचालित की जाती है ।

चाइल्ड लाइन 1098 राष्ट्रीय आपातकाल सुविधा है जिस पर अनाथ गरीब, असहाय, एवं अपनो से दुखी हुए बालक बालिकाओं का निशुल्क परामर्श दिया जाता है साथ ही बाल श्रम ,बाल विवाह ,बाल शोषण, योन शोषण इत्यादि मामलों में अधिकारियों के जानकारी को देकर उचित कार्यवाही का प्रबंधन किया जाता है साथ ही साथ इस सेवा के माध्यम से लोगों को इसके प्रति जागरूक किया जाता है एवं बालकों को सहायता उपलब्ध करवाई जाती है टीम सदस्य बसुडा कटारा के द्वारा बताया गया कि अब तक हमारे पास 3672 कॉल आए हैं जिनको हमने उचित प्रबंधन के माध्यम से जो भी सेवाएं उपलब्ध हैं उनके बारे में बताया गया एवं उनका सफल क्रियान्वयन किया गया साथ ही साथ यह भी बताया गया कि हमारे पास जो भी कॉल आते हैं उनका हमारे द्वारा निस्तारण किया जाता है एवं उच्चाधिकारियों को अवगत करवाते हुए पीड़ित परिवार को सहायता उपलब्ध करवाई जाती है समागम में आए प्रतिभागियों ने भाग लिया था उनको चाइल्ड लाइन 1098 कि ओपन सेवाओ को जानने का ऐसा मौका मिला कि चाइल्ड लाइन 1098 की सेवाएं किस प्रकार से कार्य करती हैं एवं लोगों से किस प्रकार से सीधा संवाद होता है ।टीम सदस्य कांति लाल यादव एवं निशा चौहान ने सभी प्रतिभागियों को ओपन सेंटर के माध्यम से कॉल लगा कर सीधा सीसी नॉर्थ में कनेक्ट किया जिससे समुदाय के सभी प्रतिभागी साथ में ओपन में बात करते हुए वहां से अंकित जी से बात हुई तो अंकित जी के द्वारा वागधारा संस्थान में समागम सम्मेलन में पहुंचे अनीता जी कटारा एवं बलवंत जी के द्वारा बात करवाई गई सीसी नॉर्थ में अंकित जी के द्वारा बताया गया कि आपका स्वागत है आपका कॉल हमारे यहां 0 से 18 वर्ष के बालको को कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर मदद की जाती है और यह एक राष्ट्रीय आपातकालीन सेवा है । आप लोग भी हमें बताएं कि जो लोग किसी भी प्रकार कि समस्या से ग्रसित है तो आप हमें अवगत कराए एवं बालकों के बारे में किसी भी प्रकार की कोई समस्या है तो उनका तुरंत समाधान किया जाएगा ओर जिस जिले में भी अगर कोई बालक समस्या से ग्रसित होगा तो उस जिले की चाइड लाइन को अवगत करवाया जाएगा ताकि चाइल्ड लाइन 24 घंटे के भीतर आपके पास पहुंचेगी एवं बालकों को मदद करेगी |

चाइल्डलाइन के जिला समन्वयक द्वारा बताया गया कि बांसवाड़ा जिले में चाइड लाइन के द्वारा जो भी कॉल आती हैं वह समस्त उच्च अधिकारियों को अवगत करवाने के बाद उन समस्याओं के माध्यम से कार्यवाही की जाती है एवं पीड़ित परिवारों की मदद की जाती है | आज समुदाय ने भी चाइल्ड लाइन की ओपन सेवा देखकर भूरी भूरी प्रशंसा की एवं आए हुए सभी लोगों ने बताया कि वास्तव में आपके द्वारा भी हमारे गांव में भी जिस प्रकार के कार्य किए जा रहे है बहुत ही सराहनीय है क्योंकि जब भी हमारा कोई बच्चा बीमार होता है या थाने में किसी प्रकार का मुकदमा होता है तो हम तुरंत आपको याद करते हैं क्योंकि वहां पर अगर अधिकारी हमारी नहीं सुनते हैं तो निश्चित ही आपके प्रतिनिधि के माध्यम से हमारी मदद कि जाती है साथ ही साथ समुदाय के द्वारा समागम में 1327 लोगों ने इन 12 दिनों में सेवाओं को जाना एवं फोन टेस्टिंग करते हुए शपथ ली कि हम अभी शपथ लेते हैं कि हमारे जीवन में भी हमें कहीं पर भी अगर इस प्रकार के बालक बालिकाएं मिलते हैं तो हम निश्चित ही राष्ट्रीय आपातकालीन सेवा 1098 पर संपर्क कर उन लोगों की मदद करेंगे यह बहुत ही अच्छा कार्य है एवं इसमें निश्चित ही बालकों को राहत एवं सहयोग प्रदान होता है | वागधारा संस्था द्वारा किए जा रहे कार्य वास्तव में बहुत ही सराहनीय हैं |

1. वसूनी के सोमला भाई द्वारा बताया गया कि मुझे समागम में आने के बाद चाइल्ड लाइन के बारे में अच्छे से जानने का मौका मिला कि बालको के बारे में किसी भी प्रकार कि कोई भी परेशनी हो तो सदेव तत्पर है चाइल्ड लाइन 1098
2. कजलिया नी जमना बाई वताडयू कि अवे तो अमारे सोरा सोरी अमारु केवो ने करे तो अमे तमने फोन करंगा | सुरअ भणवा ने जए तो तमने सूचना करंगा | सोरो सोरी बीमार पड़े तो तमने याद करंगा |आतों घणी ताजी सुविधा है अमारे बल्ले |
3. चाइल्ड लाइन माटे फूलजी भाई ज़णायु के 1098 नानअ बालकअ नें माटे आ घनी चोकस सुविधा है |
4. खुटा नाराजी कि रकमी द्वारा भी वागधारा संस्था कुपड़ा बांसवाडा के द्वारा संचालित चाइल्ड लाइन के बारे में बताया गया कि सेवा विस्तार के बारे में जीतनी भी प्रशंसा कि जावे उतनी कम है क्योंकि एक आपकी ही सेवा है जिन्होंने कोरोना काल में भी हमारे हाथों को थामे रखा जिन्होंने इन विपरीत परिस्थियों में हमारा जो साथ दिया है वह बहुत ही सरहनिया है |

चाहल्ड लईन 1098 टीम सदस्य
शोभा सोनी
नरेश चन्द्र पाटीदार

कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता समागम में दिखा सच्चा स्वराज

"हिंदुस्तान शहरों में नहीं, गांवों में बसता है । इसीलिए हम अगर अपने ग्रामीणों के जीवन में सुधार और विकास कर सकें, तो बाकी का कुल सुधार अपने आप हो जाएगा । ग्राम स्वराज की मेरी कल्पना यह है की वह एक पूर्ण प्रजातंत्र होगा । उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी ।"

महात्मा गाँधी

वाग्धारा आदिवासी गांवों में संप्रभुता के पुनरुद्धार के लिए समुदाय के संवाद की प्रक्रिया को प्रारंभिक प्रयास के रूप में मानती हैं, और यह विभिन्न रूपों में अभियान का आयोजन करता रहा है। हमने विगत पांच वर्षो में हर वर्ष अलग-अलग रूप में एक ही उद्देश्य के साथ पहले यात्रा और फिर समागम का आयोजन किया है । इस वर्ष कोरोना के कारण समागम का स्तर तो काफी छोटा रखा परन्तु इसकी गुणवत्ता हर मामले में पिछले समागमों से अलग थी और अपने सदस्यों द्वारा जो सन्देश हम समुदाय के लोगो तक पहुँचाना चाहते है, वो भी सुदृढ़ रूप से उन तक पहुँच रहे है । इस वर्ष हमने अपने सहजकर्ता, जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों, एवं सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों के साथ समागम के उद्देश्य को साझा किया । सच्चा स्वराज के विषय के प्रति वाग्धारा हमेशा ही गंभीर है और हमारे जनजातीय समुदाय तक इसे कैसे पहुँचाया जाये इस पर भी हम निरंतर विचार करते रहते है । जिन विचारों से प्रेरित होकर इस संस्था की स्थापना की गयी थी उसे मूर्तरूप देने में जनजातीय समुदाय एक निदेशक के रूप में आगे आया है । स्वराज कोई वस्तु नहीं जिसे हम लोगो में बाँट दे, यह एक भावना, एक विचार है जिसके लिए हमे खुद जागरूक होना होगा और अपने समुदाय को भी जागरूक करना होगा । इसी उद्देश्य के साथ इस वर्ष समागम का आयोजन हुआ जिसमें हर वर्ष की तरह सच्ची खेती, सच्चा बचपन, और सच्चा स्वराज की प्रदर्शनियां लगायी गयी । हमारे सदस्यों ने तीनों प्रदर्शनियां बहुत उत्साह के साथ देखी और उससे सिखा भी । सच्चा स्वराज की प्रदर्शनी में गत वर्ष की तरह पौराणिक मिट्टी के बर्तन, चरखा, बैल गाड़ी, संगठनों द्वारा किये गये प्रयासों की एक पोस्टर, सरकारी योजनाएं, ग्राम चौपाल,इत्यादि से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ के सुचनापत्रक तैयार कर लगवाये गये थे । समागम में अनेक विषयों पर चर्चा भी हुई, जिसमे से एक विषय प्रदर्शनी की भी थी, प्रदर्शनी को देख कर सदस्यों ने क्या सिखा, क्या नया देखा, इत्यादि चर्चा हुई । **सच्चा स्वराज की प्रदर्शनी पर लगी जानकारियां –**

1. मनरेगा से जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां
2. तीनों राज्यों में संचालित सरकारी योजनाओं की जानकारियां
3. हमारे पौराणिक मिटटी के बर्तन
4. ग्राम चौपाल से जुड़ी जानकारियां
5. जिला एवं ब्लॉक स्तर पर किये गए प्रयासों की जानकारियां
6. व्यापार रहित स्वराज की एक सुचना पत्रिका
7. ग्राम सभा से जुड़ी जानकारियां

पहले सदस्यों का ध्यान केवल पौराणिक बर्तनों की ओर ही जा रहा था, फिर वह उपस्थित स्वराज के सहजकर्ताओं ने सदस्यों को ऊपर लिखी जानकारियों पर भी ध्यान देने को कहा । समागम में आये काफी लोगो को ग्राम चौपाल, ग्राम सभा, इत्यादि विषयों पर कम ज्ञान था, परन्तु समागम में लगी सुचना पत्रिका को पढ़ एवं समझ कर उन्हें इसकी महत्वता का ज्ञान हुआ । समुदाय के साथ हुई चर्चा में जब यह प्रश्न किया गया की सच्चा स्वराज की प्रदर्शनी पर लोगो ने क्या देखा, तो चर्चा सिर्फ पौराणिक मिटटी के बर्तनों तक ही नहीं सीमित थी बल्कि अनेक प्रकार के उत्तर मिले जो कुछ इस प्रकार है –

मनरेगा की लगी सुचना पत्रिका से लोगो ने इसे पूर्ण रूप से समझा, इस योजना के तहत कार्य क्षेत्र पर मिलने वाली सुविधाओं के बारे में भी जाना (जिसकी जानकारी उन्हें पहले नहीं थी)

ग्राम चौपाल की बैठक कैसे होती है, कब होती है, इसमें किन-किन लोगो की भागीदारी हो सकती है, इत्यादि विषयों के बारे में जाना ।

लोगो ने अनेक प्रकार के बर्तनों में भी रूचि दिखाई जिसका उपयोग अब वह नहीं करते । लेकिन बहुत से लोगो ने इनके वापस उपयोग करने के बारे में भी कहा ।

तीन महत्वपूर्ण बातें जिससे खेती में भी स्वराज झलकता है-

- **गाँव का बीज गाँव में**
- **फले का बीज फले में**
- **घर का बीज घर में**

ग्राम सभा की बैठक के आठ दिन पहले ग्राम पंचायत को इसकी सुचना गाँव में सभी लोगो को देनी चाहिए परन्तु ग्राम पंचायत में उपस्थित सदस्य ऐसा नहीं करते और वे केवल उन्ही लोगो को बुलाते है जो उनके पक्ष में बात करे । ग्राम सभा में गाँव के सभी मुख्य लोगो की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए ।इसी प्रकार समागम में आये लोगो ने स्वराज के अनेक विषयों पर चर्चा की और इसे गाँव के बाकी साथियों के साथ भी साझा करने का निर्णय लिया । लोगो ने यह बात भी मानी की स्वराज की भावना लोगो के मन से अब विलुप्त हो रही है जिसे पुनः जीवित करना होगा और अपने आचार-विचार को भी इसी प्रकार ढालना होगा क्योंकि स्वराज के मार्ग पर ही चल कर हम स्वावलंबी होंगे और दुसरो पर निर्भरता को कम कर, आत्म-निर्भर बनेंगे ।

आगामी समय में संगठनो द्वारा किया जाने वाले काम इस प्रकार है -----

1. परम्परागत परम्पराए जिनमे सामाजिक,आर्थिक,सांस्कृतिक, एवं समुदाय को जोड़े रखना ।
2. पात्र व्यक्तियो तक योजनाओ को पहुँचाना एवं जोड़ना।
3. युवाओ को सच्चा स्वराज स्थापित करने के लिए आगे लाना एवं जिम्मेदारी देना ।
4. संगठन सदस्यों को नेतृत्व प्रदान करना ।
5. संगठन एवं संस्था की सूचनाओ को समय समय पर आदान प्रदान करना ।
6. आधुनिकीकरण के प्रभाव को कम करना ।

परमेश पाटीदार
थीम लीडर सच्चा स्वराज, वाग्धारा

आदिवासी समाज की स्वराज संस्कृति

किसी भी समाज का अतीत बहुत महत्वपूर्ण होता है और आदिवासी समाज की स्वराज संस्कृति भी वर्षो पौराणिक है जिसे जानने से पहले हमे ये जानना महत्वपूर्ण है की स्वराज संस्कृति क्या है ? स्वराज और संस्कृति दो अलग अलग शब्द है। स्वराज का अर्थ है 'स्वयं का राज', और संस्कृति शब्द का अर्थ है 'सिखा हुआ व्यवहार' जो जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक है । स्वराज एक सोच है जिसे आदिवासी संस्कृति के साथ जोड़ कर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परंपरा स्वरुप बढ़ाये जा रहे है । जनजातीयों के सन्दर्भ में विचार करें तो वे इतने वर्षो के पश्चात् भी पुरातन जीवन स्थिति को आगे लिए बढ़े जा रहे है । यदि हम इनके जीवन शैली पर ध्यान दे तो इनकी अनेक परम्पराएं एवं रीति रिवाज़ स्वराज की भावना से जुड़ी हुई है । अनुशासन और मानवीय सम्बन्ध जनजातीय संस्कृति की छत्र छाया में पुष्पित-पल्लवित होते है । बीज, खाद, पशु-पालन, फल, सब्जियाँ, अस्वस्थ होने पर दवाईयाँ, इत्यादि चीजों के लिए आदिवासी समाज को किसी भी प्रकार के बाज़ार पर निर्भर नहीं होना पड़ता, वे सभी आपस में ही मिल कर किसी भी कार्य को पूर्ण करते । आदिवासी अपनी जीवन में अनेक प्रकार की जरूरतों के लिए प्रकृति पर निर्भर होते है, वे शहर या उनकी सुख-सुविधाओ पर निर्भर नहीं होते। उनके नृत्य-संगीत, गृह-सज्जा, मनोरंजन,इत्यादि को सवारने का काम भी स्वराज की भावना से निर्मित प्रकृति ही करती है।जनजातीयो के अनेक रीति-रिवाजों में से हलमा, नोतरा, पूजा-पद्धति, आदि स्वराज की भावना से विद्यमान है।

किसी भी बड़े और कठिन कार्य को करने के लिए, आदिवासी समुदाय कभी सरकार या उनके प्रतिनिधि पर निर्भर नहीं होते, वे आपस में स्वयं से ही हलमा करके उस कार्य को पूर्ण कर लेते जैसे- भवन बनाना, नहर की सफाई, तालाब व कुंआ की खुदाई, फसलो की कटाई, स्कूल व अन्य सामाजिक भवनों की साफ़-सफाई, आदि । कुछ ऐसे कार्य जिसमे नगद की आवश्यकता पड़ती है तो, उसकी कमी होने पर, जनजातीय समुदाय आपस में नोतरा कर धन एकत्रित करते और कार्य को पूर्ण करते हैं । वे खेती में भी किसी प्रकार की आधुनिक संसाधन का प्रयोग ना कर, जैविक खेती ही करते है भले उससे उनको कोई आर्थिक लाभ नहीं होता या कम लाभ होता। इसी स्वराज संस्कृति का एक उदहारण है यहाँ के लोगो की खेती करने का ढंग- जनजातीय कभी भी बीज, खाद, पानी,हल, इत्यादि संसाधनों के लिए बाज़ार पर आश्रित नहीं होते है। वे अपना बीज संरक्षित करके रखते और उसे ही हर वर्ष उपयोग में लेते और न केवल खुद उपयोग करते बल्कि ज़रूरत पड़ने पर गाँव के दुसरे लोगो को भी बीज देते है और उनकी सहायता करते है, खाद के लिए वे कोई भी रासायनिक पदार्थ ना उपयोग कर, पशु-पालन करते जिससे उन्हें देशी खाद बनाने का संसाधन उपलब्ध हो जाता। इस प्रकार वे अपने जीवन के सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य को स्वराज के दृष्टिकोण से करते है। जनजातीयों की सबसे बड़ी विशेषता है उनका आत्मनिर्भर होना, जो उन्हें आधुनिक विकास से होने वाली बिमारियों से भी दूर रखता है और उन्हें समय के साथ मजबूत बनाता है न केवल इतना ही वे अपने विकास के साथ साथ प्रकृति को भी संरक्षित रखते है। परन्तु बदलते समय के साथ आदिवासी समाज में भी काफी परिवर्तन देखने को मिला है और ये परिवर्तन स्वराज के इस विचार को कमज़ोर ना कर दे इसके लिए हम सब को मिल कर एक जुट होना होगा और आदिवासी संस्कृति को स्वराज से जोड़ कर आने वाली पीढ़ी को भेट स्वरुप देना होगा ।

सानिका सिंह, कार्यक्रम प्रबंधक, सच्चा स्वराज, आनन्दपुरी

वागड़ रेडियो ने दी समुदाय को जानकारी और किया जागरूक

बीत ही गया इस साल का आखिरी महीना, इस साल में कोरोना से हुआ मुश्किल सबका जीना, किसी के सपने गए तो, गए किसी के अपने, दुआ करे कोरोना जैसी महामारी नहीं आये किसी भी साल, खुशियां रह गई जो इस साल, दुगुनी मिल जाए आने वाले साल ।

हमारे आने वाले साल में आप सभी स्वस्थ रहे, आपके सपने पुरे हो और आप एक अच्छे मुकाम को हासिल करे। हमारे प्यारे वागड़ वासियो को नव वर्ष 2021 की हार्दिक शुभ कामनाये!!

वाग्धारा संस्था में संचालित वागड़ रेडियो 90.8F.M. ने दिनांक 21 नवंबर 2020 से 1 दिसंबर 2020 तक वाग्धारा संस्था में हुए कृषि एवं जनजातीय संप्रभुता समागम के दौरान कैनोपी लगाई और सैकड़ों की तादाद में समुदाय को वागड़ रेडियो की जानकारी दी, साथ ही ऑनलाइन एप डाउनलोड करवाया गया और कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ताओं से मिलवाया । जिससे उन्हें पता चला कि रेडियो पर बोलने वाले लोग भी साधारण व्यक्ति हैं ताकि वे भी अपनी बात को रेडियो के माध्यम से पूरे समुदाय तक पहुंचा सके क्योकि यह रेडियो समुदाय का है और समुदाय की बात को समुदाय से लेकर समुदाय के द्वारा समुदाय तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम है।

गत माह में वागड़ रेडियो के माध्यम से आत्मनिर्भरता, फेक न्यूज़ और पोषण को लेकर कार्यक्रम प्रसारित किए गए । जिसमें आत्मनिर्भरता को लेकर योजनाओं की जानकारी दी गई जिससे कोरोना महामारी के समय आमजन योजनाओं का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बन सकें, साथ ही फेक न्यूज़ को लेकर कार्यक्रम फैक्टशाला सोचो, समझो और शेयर करो प्रसारित किया गया, जैसा कि इसकी टैगलाइन से ही हमें समझ में आ गया है कि किसी भी बात की पूरी जानकारी ना हो तो उसे हमें आगे लोगों तक अग्रेषित नहीं करनी है, न हीं उस पर अमल करना है और कार्यक्रम पोषण की पोटली के माध्यम से भी समुदाय को लेकर जागरूक किया गया । इस बीते वर्ष में वागड़ रेडियो के माध्यम से कोरोना महामारी को लेकर बहुत सी जानकारी साँझा की, साथ ही पोषण को लेकर भी चर्चा की गई और लॉक डाउन के चलते आमजन अपनी आजीविका कैसे चलाए, इसके साथ ही किसान भाई बहन अपनी आमदनी कैसे बढ़ाये इससे जुड़े कार्यक्रमों पर जोर दिया गया । जिससे समुदाय को एक गति मिली ।

वर्ष 2021 के प्रथम माह (जनवरी) की गतिविधियाँ : • किसान भाइयो के लिए मौसम की जानकारी के साथ आने वाले समय के लिए रबी की फसल में सिंचाई ,खाद एवं खरपतवार प्रबंधन की जानकारी साथ ही सर्दियो में पशुपालन कैसे करे । • सर्दियो में बच्चो की देखभाल, भोजन विविधता व पोषण की जानकारी । • युवाओ के लिए रोजगार समाचार, स्वास्थ्य, शिक्षा और खेल सम्बंधित जानकारी । • योजनाओं, अधिकारों, कर्तव्यों की जानकारी के साथ गाँव और देश का विकास कैसे करे। • महिलाओं के स्वास्थ्य, खान-पान, व घरेलु उपचार की जानकारी।

रंजीत यादव, वागड़ रेडियो स्टेशन मैनेजर

कोरोनाकाल में जनजातीय स्वराज संगठनों की भूमिका एवं प्रयास

(इकाई – मानगढ़)

विगत दिनों आई महामारी के चलते जनजातीय स्वराज संगठनों ने आनंदपुरी गागंड़तलाई फतेहपुरा एवं झालोद के गांवों में जाकर जनजातीय स्वराज संगठनों के माध्यम से समुदाय के लोगों की मदद की साथ ही लोगों को यह एहसास भी नहीं होने दिया कि आप के मध्य में कोई है या नहीं फिर भी हमारा संगठन हमेशा आपके साथ था और रहेगा हम आपको बताना चाहते हैं कि आनंदपुरी ब्लॉक में शन्तिलाल एवं गुलाब जी बेन साहब ने बताया कि जब कोरोना चल रहा था तब लोग एक दूसरे के पास जाने के लिए डर रहे थे । कई लोगों के पास तो खाने की सामग्री नहीं थी तो कुछ के पास पैसे होते हुए भी बाजार से लाने के लिए हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे । क्योंकि बाहर निकले तो पुलिस का डर और नहीं निकले तो घर में अनाज की समस्या करे तो क्या करें । इसी बीच वाग्धारा संस्था के द्वारा संचालित स्वराज संगठन के भाई श्री हरिशंकर के द्वारा बताया गया कि आप लोग किसी भी प्रकार की परेशानी में हो तो हमें बताएं हमारा संगठन आपकी पूरी तरह से मदद करेगा किस प्रकार से आपको समस्या है उसका निदान हम करेंगे और आप सभी को परेशान नहीं होने देंगे । आप सभी को जो परेशानी हो रही है उसे हमने राज्य सरकार से उच्च स्तर तक पहुंचाया जिन लोगों के खाते में राज्य सरकार ने पैसे तो डाल दिए परंतु निकालने के लिए जाए तो कैसे जाएं । ई-मित्र की सुविधा उनके घर पर उपलब्ध करवाई एवं उनको बताया कि आप उन लोगों के घर तक जाएं एवं उनके पैसे निकाल कर दे । साथ ही जिन लोगों को खाद्यान्न की समस्या थी उन लोगों को भी खाद्यान्न उपलब्ध करवाया वागधरा संस्था के द्वारा भी सभी अधिकांश गांवों में भोजन पैकेट उपलब्ध करवाए गए जिसमें दाल, चावल, चाय, तेल, मसाले, हल्दी साथ ही मूंगफली भी उपलब्ध करवाए गए । आप लोगो को किसी भी प्रकार से कही पर जाना नहीं पड़ेगा । उसके पश्चात जिन लोगों के बच्चे विद्यालय में नहीं जाकर इधर उधर भटक रहे थे उन बच्चों को चिन्हित किया गया एवं उन बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया एवं गांव के जो नौजवान युवा पढ़े लिखे थे उन्होंने घर-घर जाकर उन लोगों को पढ़ाई की व्यवस्था भी की उसके पश्चात सबसे बड़ी समस्या यह थी कि जो लोग बाहर से मजदूरी कर घर पर आ रहे थे उन लोगों को कैसे समझाया जाए कि आप को कैसे रहना है। वह डर रहे थे कि यह लोग कहीं कोरोना लेकर भी ना आ जाए इसके लिए उन लोगों को घर से अलग 14 दिन रखा साथ ही उन लोगों को बताया गया कि आपको अपने कपड़े कहीं भी बाहर जाते हो तो गर्म पानी में धोने हैं एवं आपको अलग ही रहना है । आपके खाने पीने के जो बर्तन और जो जरूरतमंद की चीजें हैं उनको हमेशा के लिए अलग रखना है ताकि आपकी छुई हुई चीजें उन लोगों के काम में ना आये । उसके पश्चात भी फतेहपुरा की सूर्या बहन ने बताया कि जो लोग बेरोजगार हो कर घर आ रहे है उन लोगों को बताया गया कि आप को न तो इन लोगों से डरना है और ना ही आपको अपने आप से डरना है । कोरोना महामारी अपने आप में ऐसी बीमारी नहीं है कि इससे लड़ा ही न जाए । हमें बिल्कुल सावधानी रखनी है कि बार-बार हम बाहर जाए तो हाथों को धोना है ,किसी भी चीजों को छूना नहीं है एवं दो गज की दूरी का पालन करना है ।

इकाई (माही)

कोविड-19 वह दौर जो शायद ही समुदाय या अन्य कोई भूलना चाहेगा. एक साथ सम्पूर्ण भारत वर्ष में लॉकडाउन लगा दिया गया अधिकतम परिवार जो की अपनी दैनिक आय (दिहाड़ी मजदुर) के माध्यम से अपने और अपने परिवार का पालन पोषण कर रह थे । मानो उनके लिए तो यह समय एक तरह से दुनिया से अलग कर दिया हो ऐसा लग रहा था । इसी क्रम में परिवार के परिवार अपने घर को पलायन करते है और बहुत से परिवारों ने इस घड़ी में अपना बहुत कुछ खो दिया।

इस घटना क्रम के मध्य राजस्थान के बांसवाड़ा, डूंगरपुर और गुजरात के आस पास के जिले जिसमें अधिकतर परिवारो का मुख्य आय का स्त्रोत दिहाड़ी मजदूरी करके अपना जीवन यापन करना था. इस समय का दंश उन्होंने भी झेला और लाखो परिवार कोसो मिल का सफर पूरा कर पुनः अपने आशियाने की और लौट आए इस चित्र को शायद दक्षिण राजस्थान ,पूर्व मध्यप्रदेश एवं उत्तर गुजरात में 100000 परिवारों के साथ कार्य कर रही वाग्धारा संस्था भाप गई थी। जिसने सबसे पहली कार्यवाही हजारो परिवारों को राशन सामग्री पहुचा कर एक राहत कार्य शुरू किया । इस समय में खास तौर पर जनजातीय स्वराज संगठन जिन्होने इस गंभीर विषय पर अपनी समझ बना ली थी जिसमे इनका साथ ग्राम स्तर पर ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति एवं सक्षम एवं समुदाय संदर्भित व्यक्ति, सहजकर्ता ने अपना योगदान गाँव के अति गरीब परिवार को चिन्हित करने एवं परिवार तक सामग्री पहुचाने का किया ।

इन सबके बीच में एक व्यक्ति ऐसा भी था जिनको निरंतर समुदाय के लिए सोचने को मजबूर कर दिया था वह थे वाग्धारा संस्था के सचिव श्री जयेश जोशी जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण टीम के साथ बैठकर आगामी कार्ययोजना बनाना तय किया ।

इस मध्य एक आपसी सामंजस्य के बीच समुदाय के लिए वाग्धारा संस्था एवं इकाई वार बने जनजातीय स्वराज संगठन जिन्होंने अपना पूर्ण योगदान देकर इस काल में अपने स्तर पर निम्न कार्य किए ।

1.वर्त्तमान में समुदाय के लाखो परिवार जो पुनःअपने आशियानों की तरफ आए है और इस क्षेत्र में आय के आयाम सीमित मात्र है परन्तु इन परिवारों को महात्मा गाँधी नरेगा के अंतर्गत जॉबकार्ड से जोड़ा जाना
2.महात्मा गाँधी नरेगा में रोजगार दिलाया जा सकता है।
3.सक्षम समूह के माध्यम से किचन गार्डन के बारे में बताकर पोषण प्रदान करना।
4. सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से वंचित लाभार्थी को जोड़ना।
5. खाध्य सुरक्षा से वंचित परिवारों को योजना से जोड़ना।
6. कोविड -19 महामारी से बचने के लिए समुदाय को जागृत करना।
7. कोविड-19 के तहत सन्देश देने के लिए " जन जागरूकता अभियान "के तहत गाँव-गाँव,ढाणी –ढाणी तक योजना के बारे में जागृत करना।

(इकाई-हिरण)

कोरोना महामारी व लॉकडाउन के बाद पलायन से गाँव में आए लोगो की जानकारी रखना

कोरोना महामारी के समय जब लॉकडाउन लगा तब गाँव से पलायन किये परिवार भरी संख्या में गुजरात के शहरो से वापस आने लगे। इसी के साथ गाँव में यह बड़ा डर था की महामारी कही गाँव में न आ जाये। इसको रोकने के लिए संगठनो ने गाँव-गाँव में मौजूद समुदाय संदर्भ व्यक्ति के माध्यम से गाँव में वापिस आये परिवारों की जानकारी एकत्रित कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व पंचायत में देने लगे जिससे रोकथाम पर जोर दिया जा सके। इसी के साथ जब शहर से वापस आए परिवारों को 14 दिवस के आइसोलेशन में रख कर क्वारंटाइन करने का प्रबंध भी किया गया।

कोरोना जागरूकता रथ के माध्यम से जागरूकता अभियान

गाँव स्तर पर समुदाय में कोरोना महामारी के चलते कई प्रकार की भ्रान्ति व अफवाह फैली हुयी थी। इससे बचाव कैसे किया जा सकता है और इस दौर में कौन- कौन सी सरकारी योजनाओं का लाभ लिया जा सकता है, उसकी जानकारी में अभाव दिखा। इसलिए समुदाय संदर्भ व्यक्तियों द्वारा कोरोना जागरूकता रथ के माध्यम से गाँव-गाँव व फले-फले वागड़ी गीत, पोस्टर , पम्पलेट के उपयोग कर जागरूकता अभियान किया गया। इसमें , कोरोना महामारी से बचाव खेती, स्वस्थ, पोषण और महामारी के समय सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करने पर विशेष जोर दिया गया।

जनजातीय स्वराज संगठन के माध्यम से राशन सामग्री वितरण

कोरोना महामारी के समय जब गाँव में अचानक लोगो को वापिस आना पड़ा, तब उन्हें अपनी मजदूरी, रोजगार सब छोड़ना पड़ा । इसके बाद वापस आए परिवारों को राशन सामग्री एवं रोज काम आने वाली अनेक चीजों की जरूरत पड़ी। इसमें संगठनो के माध्यम से समुदाय सन्दर्भ व्यक्तिओं ने खाद्य सामग्री का वितरण किया । इसी के साथ बाद में उचित मूल्य की दुकानों (PDS) से परिविरो को पात्रता अनुसार सबको राशन दिलवाने का कार्य पूर्ण किया।

- संगठनो एवं पंचायतों के माध्यम से लोगो को सरकारी योजनायों से जुड़वाना
- पंचायत में जॉब कार्ड वंचित परिवारों की जानकरी लेकर उनका कार्ड बनवाया गया।
- कुपोषित बच्चों का चिन्हीकरण किया गया।
- सामाजिक सुरक्षा योजनाओं जैसे विधवा माताओं और विकलांग जन को पेंशन योजना से वंचित वयक्तियों का चिन्हीकरण कर जुड़वाया गया।
- बरसाती खेती बचाओं अभियान चलाया गया।
- संगठनो के माध्यम से पशु कैंप का आयोजन कराया गया।
- पोषण शिविर के माध्यम से कुपोषित बच्चों की माताओं को सहायता दी गई।
- गाँव में युवाओं द्वारा बच्चो के पढ़ाई के लिए गैर-स्कूली शिक्षा चालू करना।
- वर्मी कम्पोस्ट, कम्पोस्ट, बीज उपचार व जैविक दवाई के बारे में बैठकों में चर्चा की गई।

यह सभी कार्य जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई हिरण द्वारा किए गये ।

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई (मानगढ़) की गतिविधियाँ

!! **हेता वागड़ वासीयो ने जय गुरु** !!

(आप सभी वागड़ वासियो को वर्ष 2021 नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाए)

मैं यह आशा करता हुं आप सभी का यह वर्ष मंगलमय हो ओर कोरोना जैसी महामारी फिर कभी इस विश्व नही आए,

इस पत्रिका के माध्यम से हम हर माह की तरह इस माह भी जो समुदाय के हित के लिए कार्य हुए है इसे हम आप के सामने साझा करते है,

समुदाय साथी (स्वराज मित्र) के द्वारा बीज उपचार की विधि - मानगढ़ इकाई के 276 गाँवों मे हमारे स्वराज मित्रों ने बीज उपचार का डेमो कर के सभी समुदाय के लोगो बताया, साथ ही यह बताया की अपने बीज का कैसे उपयोग करना है, इस बीज को लगाने का क्या फायदा होगा, ओर इस बीज को बोने के बाद हमे कितना खाद खेती मे डालना होगा, हमे इस बीज बोने के बाद एक अच्छी फसल प्राप्त होगी, बीज उपचार को करने के लिए इन वस्तुओं की आवश्यकता होती है गो मूत्र, गुड, उपजाऊ मिट्टी, बेसन ओर राख से बीज उपचार किया जाता, उपचार किए हुये बीज को बोने से फसल की पैदावार बढ़ जाती है।

जनजातीय संप्रभुता समागम सम्मेलन - जैसा कि हम आपको बताना चाहते हैं कि किस प्रकार से वागधारा संस्था के द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वागधारा सस्था के प्रांगण में जनजातीय संप्रभुता समागम सम्मेलन का आयोजन किया गया है परंतु सभी साथी जानते हैं कि इस वर्ष समस्त

विश्व में फैली कोरोना नामक महामारी बीमारी ने हम लोगों को किस प्रकार से अलग-थलग कर दिया एवं हमारे समस्त क्रियाकलापों एवं कार्य करने के तौर तरीके को बदल डाला है तो इस सबको देखते हुए वागधारा सस्था ने भी एक नई सोच के साथ किस प्रकार से इस बार हमारे समुदाय के लोगों के साथ हमारा कार्यक्रम आयोजित किया जाए एवं कार्यक्रम को किस प्रकार से सफल बनाया जाए इसको लेकर वागधारा सस्था के द्वारा एक प्रारूप तैयार किया गया जिसमें बताया गया कि यह कार्यक्रम तीन से चार चरणों में आयोजित होगा जिसके अंतर्गत समस्त टीमो में 80 से 100 लोगों के बैठने की क्षमता होगी एवं वह सभी लोग आपस में सामाजिक दूरी बनाए हुए होंगे एवं मास्क बांधकर बैठेंगे समुदाय के लोग आपस में किस प्रकार से वार्तालाप करेंगे इस तरह की वहां पर योजना तैयार की गई।

हम आपको बताना चाहते हैं कि सस्था के मुख्य तीन कार्य है सच्चा स्वराज सच्चा बचपन एवं सच्ची खेती इन तीनों को लेकर सस्था राजस्थान गुजरात एवं मध्य प्रदेश के 1000 गांवों में कार्य कर रही है

1. **सच्चा स्वराज** - जैसा कि स्वराज का मतलब है कि अपने आप में स्वतंत्र होना जेसे कि आज भी गाँवो में अनेको समस्या रहती है हम बताना चाहते है कि हमारे पास सबसे बड़ी ताकत हमारा समुदाय है जिसमे समुदाय के विभिन्न गाँव स्तर पर संगठन बने हुए है साथ ही साथ वह संगठन लोगो कि समस्याओं को बड़े स्तर पर रख कर समाधान करने कि क्षमता रखते है हमारे जनजातीय स्वराज संगठन इकाई के सदस्यो ने किस प्रकार से समुदाय को मजबूत किया वह हमारे लिए गर्व कि बात है चाहे बात फसल खराबे कि हो तो सभी साथियों को एक मंच पर कैसे लाना है यह हमने स्वराज संगठनो से सीखा है समुदाय कि कोई परेशानी है तो संगठन ने उसका समाधान करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है हमें आज यह कहते हुवे गर्व हो रहा है कि अगर जिला कलेक्टर से सीधा संवाद करना हो या समस्या को अवगत करवाना हो तो स्वराज संगठन कि किसी कि जरुरत नहीं पड़ेगी संगठन ने यह निर्णय लिया है कि हमारे में से ही संगठन के पास ई-मित्र के माध्यम से समस्त सामाजिक सुविधाओं से जोड़ा जायेगा इसी क्रम में संगठन के द्वारा बताया गया कि समुदायों को किसी भी प्रकार कि समस्या है तो संगठन कंधे से कन्धा मिलाकर हमेशा खड़ा रहेगा ग्राम पंचायत की जो 5 तारीख एवं 20 तारीख को मीटिंग होती है उसमें उन मुद्दों को रखा जाए एवं उनका समाधान करने के लिए कहा जाए । राज्य सरकार के द्वारा टोल फ्री नंबर 1098 पर भी शिकायत दर्ज करवानी होगी ताकि तुरंत समाधान का लाभ हम सबको मिल सकेगा

2. **बात करते हैं सच्चा बचपन की** - जैसे की हम जानते हैं कि आज भी गांवों में भी ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति बनी हुई है उसके बावजूद भी अनेकों बच्चे शिक्षा से वंचित है एवं शिक्षा जो जीवन का मूलभूत सुविधाएं वह भी उन बालको को नही मिल पा रही है नहीं मिलने का एक ही कारण है अज्ञानता जिस पर हमारे जनजातीय स्वराज संगठन इकाई के माध्यम से बालकों के अधिकार में सबसे पहला अधिकार है जीवन जीने का अधिकार, विकास का अधिकार, सहभागिता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार तो हम आपको बताना चाहते हैं कि हमारा एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि हमारे गांव में जो बच्चे शिक्षा से वंचित हैं उन लोगों को किस प्रकार से शिक्षा से जोड़ा जाए उनका एक लिखित में रिकॉर्ड तैयार किया जाए उस रिकॉर्ड का संधारण भी हमारी समिति के द्वारा किया जाए एवं उन बच्चों के घर पर जाकर स्थिति देखनी होगी कि हमारे द्वारा इनको विद्यालय से जोड़ा गया था तो यह विद्यालय में जा रहा है या नहीं जा रहा है साथ ही साथ जो बच्चे जिन्हें सामाजिक योजनाओं का लाभ जिन बालक-बालिकाओं को राज्य सरकार के द्वारा योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा है उन समस्त बालक-बालिकाओं को योजनाओं का लाभ दिलवाया हैं एवं यह सुनिश्चित करना है कि लाभ का अंतिम स्वरूप उस पात्र बालक बालिका के पास पहुंचा या नहीं पहुंचा तब तक भी हमारी कमेटी की पूरी निगरानी उस पर होनी चाहिए तभी सच्चे बचपन के स्वरूप को साकार किया जायेगा यह समस्त समुदाय के द्वारा किया जा रहा है इसका परिणाम भी समुदाय तक पंहुचा है।

3. **सच्ची खेती** - हमारा पोषण किस प्रकार से हम स्वस्थ रह सकें और किस प्रकार के हमें खाद्यान्न की आवश्यकता है उसको पूरा किया जा सके उस बारे में हमारे स्वराज संगठन के साथियों द्वारा बताया गया कि किस प्रकार से हमें जैविक खेती का उपयोग हमारे जीवन में करना है हमें पुनः पुरानी पद्यति कि खेती कि और लौटना है जिसको लेकर संस्था के द्वारा गाँवो में सब्जी कीट उपलब्ध करवाए गए है ताकि आप लोग अपने खेतों में पोषण की खेती करें एवं उनका उपयोग करें तो किस प्रकार हम को पोषण का लाभ होता है ।

समागम में किस प्रकार से रेडियो एवं चाइल्ड लाइन की सेवायो के बारे में भी अवगत करवाया गया एवं उनका सीधा संवाद करवाया गया कि संस्था के द्वारा संचालित संसाधनों में किस प्रकार से कम्युनिटी रेडियो का प्रभाव दिन प्रतिदिन लोगों तक बढ़ा है एवं इसके प्रति भी लोगों की जागरूकता बढ़ी है साथ ही साथ राष्ट्रीय आपातकालीन सेवा चाइल्ड लाइन के बारे में भी लोगों की उत्सुकता बढ़ी है एवं जरूरतमंद बालक बालिकाओं की जानकारी साझा करके उन्होंने सहयोग प्रदान किया है।

संस्था के द्वारा संचालित बातें वागधारा ने अखबार जो जन समुदाय के अंतिम छोर तक पहुंचा है एवं उसमें जन समुदाय ने अपने अपने विचार भी व्यक्त किए हैं बड़े उत्साह के साथ इस अखबार को पढ़ने का लाभ उठाते हैं हम सभी लोगों से कहना चाहते हैं कि वर्तमान में राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार के नियमों का पालन करना है घर से अगर हम बाहर निकलते हैं हमें सैनिटाइजर का उपयोग करना है एवं मास्क को बांधकर ही निकलना है साथ ही साथ सामाजिक दूरियों का भी पालन करना है हमें भीड़भाड़ वाले इलाकों में जाने से बचना है एवं हमारे त्यौहारों को भी छोटा करना है फिजूलखर्ची को रोकना है इस बीमारी ने हमें यह तो बता दिया है कि हमें किस प्रकार से हमारे जीवन को जीना है।

''मन हाजु तन हाजु तो फेर मलंगा एटले आपड़े स्वास्थ नु ध्यान राखवु है''

रोहित स्मिथ, JSSSI लीडर आनन्दपुरी

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई (हिरन) की गतिविधियाँ

वागधारा संस्था द्वारा हर वर्ष "कृषि एवं जनजातिय स्वराज समागम" का आयोजन किया जाता है, जिसका उद्देश्य समुदाय में बने जनसंगठनो एवं उनके साथ कार्यरत स्वयंसेवको के साथ इस प्रकार की चर्चा का रहता जिससे संगठन अपने प्रयासों के ऊपर आंकलन कर सके । समुदाय मे मौजूद, विकास की प्रक्रिय से जुड़े सभी हितधारको के साथ अनुभवों को साझा कर, नीतिगत बदलाव के लिए परस्पर सहयोग की बात-चीत और कार्य के क्रियान्वन के लिए मांगपत्र को तैयार कर अलग- अलग माध्यम से सरकार के साथ वकालत करने का रहता है ।

इसी विचार के साथ, इस वर्ष भी नवम्बर माह में समागम का आयोजन किया गया, जिसमे जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई हिरन से 9 जनसंगठनो ने हिस्सा लिया जो राजस्थान और मध्यप्रदेश के दो-दो ब्लॉको में कार्य कर रहे है । इस बार का समागम का आयोजन कोरोना महामारी के दौर में किया गया, एक डर भी साथ था पर उससे ज्यादा उत्साह विचारों पर बात चीत करने का, कोरोना के समय किये गए प्रयासों और कार्यो को आपस में साझा करने कर था। समागम में शुरुआत 9 जनसंगठनो से अये 109 सदस्यों के साथ हुई और दो दिनों तक चर्चा चली । इसमें संगठनो आगमन बड़े ही उत्साह के

साथ हुआ जिसमे संगठन सदस्यों ने ढोल व थाली से स्थानीय संगीत प्रस्तुत करते हुए किया।

इसमें सबसे पहले सदस्यों के साथ संगठन के महत्व के ऊपर चर्चा की गयी और सदस्यों के आपस में दुसरे संगठनो के विचार और अनुभव को जानकार सामूहिक समझ को विकसित किया गया । जब संगठन के महत्व पर बात चल रही थी तब, स्वराज संगठन कसारवाड़ी के भालजी भाई जी ने इस बात पर जोर दिया जब वो किसी मांग जैसे फसल खराबे पर मुआवजा देने गए तब संगठित होने पर उनकी मांग को अधिकारीयों द्वरा सुना गया। इससे उनके बीच यह मत निकला की सभी की मांग को पहुँचाने के लिए संगठन का जन्म बहूत जरूरी है । इसके बाद संगठन के सदस्यों ने समुदाय की अपेक्षाए बताते हुए ये चर्चा रखी के सरकारी योजनायों का लाभ और खेती में अलग-अलग प्रकार के नवाचार को बढ़ावा कैसे दिया जा सकता है। इसमें सदस्यों ने बताया की कोरोना और लॉकडाउन के समय संगठनो ने कई कार्य किये। इसमें समुदाय स्तर पर लोगो को कोरोना महामारी और जागरूक करने, शहर से वापस आये परिवारों 14 दिन तक एकांत में रखवाना, जरूरतमंद परिवारों को वागधारा या PDS के माध्यम से खाद्य सामग्री दिलवाना, सरकारी योजनायो से जुडवाना अदि जैसे कार्यो को किया गया। इन मुद्दों पर विचार करने के बाद सदस्यों के क्षमता वर्धन में सुनाने के महत्व के ऊपर एक खेल करवाया। इस खेल के बाद सदस्यों ने इस बात को मानाकी अगर उनको ज्यादा से ज्यादा लोगो को संगठन के माध्यम से जोड़ना है उनके लिए कार्य करना है तो उनको सबके विचारो को सुनना होगा जिससे संगठन की पहुच बढे।

समागम के अगले चरण में संगठन के सदस्यों ने सच्ची खेती, सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज, वागड़ रेडियो, चाइल्ड लाइन, देशी बीज और जैव-विविधता पर प्रदर्शनी अदि पर भ्रमण किया और समुदाय के विकास में सभी के महत्व को समझा। संगठन सदस्यों द्वारा फिर इन सब पर चर्चा करी गई :

सच्ची खेती: इसमें संगठन के सदस्यों ने सच्ची खेती के विभिन्न घटक जैसे जल, जंगल, जमीन, जानवर, बीज को असल जीवन में आत्मसार होते हुए देखा । इसमें देशी व पुराने बीजो की प्रदर्शनी, अजोला घास, खेती में इस्तेमाल होने वाले उपकरण व औजार पर अपनी राय रखी व उसके साथ अन्य ऐसे औजारों के नाम भी बताया जो वहां मौजूद नहीं थे पर परस्पर उपयोग में लिए जाते है। इसमें मुख्य विचार यह भी आया की सभी से खेती कम लागत में काम हो जाता है । अनेक किस्म के बीजो को देख कर सदस्यों ने उन्हें याद किया उनके विलुप्त होने के कारण पर चर्चा की जैसे की किसान भाई अब अपने उपयोग से ज्यादा बाज़ार में बिकने वाली फसलो पर जोर देते है जैसे की सोयाबीन और खेती में विविधता को भूलते जा रहे है जिसके कारण कई प्रकार के बीज विलुप्त हो चूके है। सदस्यों ने बीज की बनी रंगोली को चर्चा में बताते हुए अनेक बीजो की पहचान कर भी बताई। इस चर्चा में भीलकुंआ संगठन के सवजी भगत साहब ने ये पूछा अगर ये सब बीज विलुप्त हो चुके तो संस्था के पास ये कहा से सहेजे गए है। इसमें चर्चा में संगठनो के प्रयासों को बतलाते हुए बताया गया की गाँव में अभी भी कई लोग है जिन्होंने इस "सामुदायिक सम्पत्ति" को बचा कर रखा है, लेकिन वो सभी अभी संख्या में कम है। इसी के साथ प्रण लिया गया की हम अब्ब इन बीजो को आपस में लेंन- देंन कर पुनः अपनी खेती, अपने पोषण, अपने जीवन और परमपरा का हिस्सा बनायेंगे।

खेती पर बने विभिन्न मॉडल जिसमे मिट्टी कटाव से बचने के लिए मेड बंदी, चारागाह प्रबंधन, पेड़ लगाना, भूमि समतलीकरण जैसे उपायों को दर्शाया गया । साथ ही साथ मृदा स्वस्थ और संरक्षण के लिए वर्मी कम्पोस्ट खाद, उकेडा (कम्पोस्ट खाद), वर्मी वाश, दलहनी फसल जैसे मूंग, मिश्रित खेती, फसल चक्र जैसे उपायों को बताया गया जिससे खेती का मूलभूत आधार जो "मिट्टी" है वह स्वस्थ बनी रहे। इन उपायों से मिट्टी में पाए जाने वाले पोषक तत्वों को बनाये रखने में जो सहायता मिलती उन पर जोर देते हुए चर्चा को आगे बढाया गया । अंत में पोषण बगिया जैसे कारगर उपाय पर भी चर्चा का मुख्य बिंदु रखा गया, जिसमे आम जीवन में पोषण की आपूर्ति करी जा सके।

सच्चा बचपन: सच्चे बचपन में मॉडल के माध्यम से बच्चों के चार अधिकार जिसमे जीना, विकास, सुरक्षा और भागीदारी को बताया गया और चर्चा चालू की गई । इसके ऊपर चल रहे प्रयास जैसे कुपोषण और उसके पोषण शिविर, ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के द्वारा गाँव में किये गए कार्य, बच्चो की भागीदारी बढ़ाने के लिए बाल पंचायत जैसे कार्यो पर बात करी। संगठन के सदस्यों ने चर्चा में बताया की बच्चो के जीवन के लिए सबसे जरूरी उनका स्वस्थ्य है जो पोषण व खान-पान से मिलेगा। कुपोषण से बच्चो के जीवन को बचाना है माँ के स्वास्थ्य पर ध्यान देना ज्यादा जरूरी है। इसकी के साथ खेती को भी जोड़ा गया ।

सच्चा स्वराज: सच्चे स्वराज के चर्चा, स्वराज के चरखें के माध्यम से करी गई, जिसमे ग्राम स्तर पर गाँव के लोगो के द्वारा बनाई गयी ग्राम विकास की योजना पर था । इसमें गाँव की ग्राम सभा पर चर्चा करी गई । संगठन के सदस्यों ने विचार रखे की गाँव में अगर ग्राम सभा में फैसले लेंगे तो सबके मत से लिए जाएंगें और धीरे-धीरे गाँव को विकास की ओर ले जाया जा सकता है । इसमें संगठन द्वारा किये गए प्रयास को भी याद किया की कैसे किसानो के फसल खराबा के मुद्दे, सरकारी जर्जर भवन के मुद्दे पर सभी के द्वारा मिलकर कार्य किया गया और ब्लॉक व जिला स्तर पर दिए गए ज्ञापन पर बात की गई। इसके बाद पुराने दिनों में काम आने वाले सामान को प्रदर्शनी में देख कर उनके अलग -अलग उपयोग पर भी चर्चा हुई । सच्चे स्वराज पर हलमा और सेवा के भाव पर भी जोर दिया गया ।

कृष्णासिंह, JSSSI लीडर कुशलगढ़

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई (माही) की गतिविधियाँ

!! मेरे समुदाय परिवारो को राम-राम !!

साथियो जैसा की आपको ज्ञात है इस वर्ष हमारा जनजातीय संप्रभुता समागम का आयोजन हर वर्ष के भांति इस वर्ष भी किया जाना था परन्तु आप सभी साथी जानते है की इस बार कोरोना जैसी महामारी के कारण इसको छोटा प्रारूप देना पड़ा। जिसमे हमारे जनजातीय स्वराज संगठन के पदाधिकारी व सदस्यों के अलावा समुदाय से सीधी वार्तालाप करने वाले एवं समय समय पर बैठको का आयोजन करने वाले हमारे स्वराज साथियों ने इस कार्यक्रम में अपनी हिस्सेदारी प्रस्तुत की .कार्यक्रम काफी उत्साह एवं उमंग भरा रहा जिसमे मुख्यत सभी साथियो को वागधारा परिवार द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रदर्शनी के साथ वार्तालाप करके इस पर विवरण से बताया गया कार्यक्रम मानो किसी सामाजिक कार्यक्रम सा लग रहा था जिसमे हर साथी को जिज्ञासा थी की हमारे द्वारा किए जा रहे कार्यो का व्याख्यान एवं आगामी कार्ययोजना की तैयारी किस प्रकार एक क्रमबद्ध तरीके से की जा रही है। साथियो बड़ा

ही उत्साह देखके हम सब भी काफी अभिभूत थे इस प्रकार के कार्यक्रम हम त्रैमासिक करते रहेंगे ताकि समुदाय की समस्या हमारा संगठन समझें एवं इसको खंड,जिला एवं राजधानी तक ले जाने में सक्षम हो जाए ताकि आने वाली सदियों तक हमारा संगठन अपने कार्यो के लिए समुदाय के साथ हमेशा खड़ा रहे ।

सच्चा सवराज - जैसा की अपने नाम से स्पष्टता झलकाता शब्द स्वराज जिसमे हमने एवं हमारे समुदाय के विभिन्न 319 ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति से निकल कर आए 09 भिन्न-भिन्न जनजातीय स्वराज संगठन इकाईयों के सदस्य जो की अपनी स्थानीय समस्या को लेकर माह में एक दिन एक जगह एकत्रित होकर समस्या को रखते है एवं इन समस्या को हल करने की बात रखते है .साथियो आपको ज्ञात होगा वर्तमान में फसल खराबा को लेकर एक बड़े पैमाने पर खंड स्तर एवं जिले स्तर पर हमारे साथी जो की समुदाय की समस्याओ को निस्वार्थ भावना से आवाज को उठाते है एवं अपने हक के लिए लड़ते है इस माह संगठनो ने मिलकर हर ग्राम पंचायत पर इ-मित्र मशीन लगाया गया है जो की सीधे- सीधे रूप से समुदाय को महात्मा गाँधी नरेगा अंतर्गत जानकारी,सरकारी योजनाओ की जानकारी ,सामाजिक सुरक्षा योजना की जानकारी एवं अन्य सुविधा जो की ई-मित्र सेंटर पर मिलती है वह सब सुविधा इस मशीन पर उपलब्ध है परन्तु वर्तमान में कही – कही पर यह मशीन मात्र एक कबाड़ बनके रह गया है समुदाय को परेशान होकर पास के बड़े गाव या कस्बे में जाने को मजबूर होना पड़ता है इस हेतु इस बार की बैठक में यह निर्णय लिया गया की किस प्रकार से इन मशीनों को पुनः शुरू करके समुदाय को सीधा इन सब का लाभ ग्राम पंचायत पर मिलना शुरू हो जावे .इस क्रम में इस बार संगठनों द्वारा खंड स्तर पर ज्ञापन दिया गया. साथियों आगामी समय में भी समुदाय के हर छोटे एवं बड़े मुद्दे के लिए हमारे संगटन हमारे समुदाय के लिए खड़े है....

सच्चा बचपन - जैसा की हर बार हमारे ग्राम स्तर पर बनी ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति जो कि सीधे- सीधे ग्राम विकास की योजनाओं के साथ ही ग्राम में बच्चों के अधिकारों पर भी हमेशा बात करती है जिसमे समिति द्वारा यह देखा जाता है की बच्चों को शिक्षा ,सहभागिता ,सुरक्षा ,खेल , जीवन जीना ,एवं बालश्रम नहीं होने देने का कार्य देखा जाता है जिसमे समिति सीधे रूप से प्रण लेकर विगत 02 साल से देख रही है जिसमे वर्तमान में सबसे बड़ा परिवर्तन समिति द्वारा यह देखा गया की 39 ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति द्वारा घोषित किया गया की हमारे ग्राम में किसी प्रकार से 6-14 वर्ष का बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं है एवं इसको एक क्रम आगे बढा के स्कूल प्रबंधन को लिखित में दिया की हमारी समिति यह घोषणा करती है की इसके साथ ही हमारे गाँव में कोई बालक एवं बालिका बालश्रम में भी लिप्त नहीं है इसको स्कूल प्रशासन द्वारा भी अवलोकन किया गया एवं स्कूल प्रबंधन ने भी यह सही मान एवं लिखित में पंचायत स्तरीय बाल सरक्षण समिति(PLCPC) को प्रेषित किया.साथियो हमें उम्मीद है हमारा ग्राम स्तरीय ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति बच्चो के अधिकारों को लेकर हमेशा तत्पर रहेगा एवं गाँवो में किसी प्रकार का बाल श्रम नहीं होने देगा.साथियो इस बार जनवरी माह में आपके हर ग्राम पंचायत पर सामाजिक सुरक्षा योजनां को लेकर एक कैंप का आयोजन किया जाना है जो भी साथी अभी भी वंचित है इस कैंप से जरुर जुड़े एवं योजना का लाभ लेवे....

सच्ची खेती - हमारा परिवार हमेशा पोषण के लिए जैविक कृषि पर हमारे समुदाय से जुड़े स्वराज साथियो के साथ सक्षम समूह के माध्यम से SIFS पर ग्राम चोपाल का आयोजन किया जा रहा है जिसमे हमारा समय समय पर जैविक खाद बनाना एवं इसके साथ ही जैविक दवाई जैसे इस बार 47 सक्षम समूह में दशपर्णी, जीवामृत बनवाया गया। साथियों इस बार अपने जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग ईकाई –माही से जुडी सक्षम समुह की 6380 महिला या 6380 परिवार को पोषण के लिए सब्जी किट का वितरण किया गया जिसमे हमारा सपना है की परिवार स्वयं सब्जियों के लिए बाजार पर आश्रित ना रहे एवं खुद अपने घर पर सब्जी उगाकर स्वराज की एक सीढ़ी चढ़े और अपना एवं अपनी बच्चो को सब्जी के माध्यम से पोषण दे पाए । इस माह हमारे द्वारा विश्व मृदा दिवस का आयोजन अपने 319 गाँवो में किया गया जिसमे महिला किसानो द्वारा मिट्टी का मोल समझा एवं समझाया गया साथ ही हमारी महिला किसानो द्वारा हलमा किया गया एवं अन्य समुदाय को इसका सन्देश दिया गया . साथियो हमारा प्रयास है की हम सक्षम समूह के माध्यम से केसे 100000 परिवारो तक हमारा सन्देश पहुँचा पाए की कैसे पुनः एक बार हमारे पूर्वजो द्वारा की जाने वाली जैविक खेती,पशुपालन कितना उपयोगी था एवं एक बार पुनः किस प्रकार से इसको स्थापित किया जाए ....

" घर से बाहर निकलते समय मास्क जरुर लगाऐं
ताकि देश जीतेगा कोरोना हारेगा"

हेमंत आचार्य, JSSSI लीडर घाटोल

बच्चों की कविता

नया साल है नई उमंग,
नई आस है जीवन में।
नई सोच है, नई तरंगे,
नई प्यास है जीवन में।
करना है कुछ नया नया अब,
नई बहार है जीवन में।
सपनों को सच करना है अब,
नई चाह है जीवन में।
करना है कुछ खुद से वादा,
आगे बढ़ना है जीवन में।
बीते पल में जो मिली निराशा,
भूलना है उसे जीवन में।
नया साल है नई उमंग,
नई आस है जीवन में।

पहेली

(1) ऐसा क्या है, जो सिर्फ बढ़ता है और कभी कम नहीं होता है?
उत्तरः उम्र

(2) बताओ जरा, गोल है पर गेंद नहीं, पूंछ है पर पशु नहीं। बच्चे उसकी पूंछ को पकड़कर खेलते - हंसते और खिलखिलाते है ।
उत्तरः गुब्बारा

(3) मैं एक ऐसा शब्द हूं, जिसे अगर तुम गलत पढ़ोगे तो सही होगा और अगर सही पढ़ोगे तो गलत होगा, बताओ इसका जवाब क्या होगा?
उत्तरः 'गलत' शब्द

(4)तीन आदमी नदी में नहाने जाते हैं। जब बाहर आते हैं, तो उनमें से सिर्फ दो ही के बाल गीले थे, तीसरे के नहीं, सोचो कैसे?
उत्तरः तीसरे व्यक्ति के सिर पर बाल ही नहीं थे।

(5) कई लोगों को राह दिखाए, कान पकड़कर लोगों को पढ़ाएं। साथ ही वे नाक भी दबाए, बताओ ये क्या कहलाए।
उत्तरः चश्मा

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वागधारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वागधारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वागधारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार | मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार | सहसंकलक : जागृती भट्ट | सहायक : कांतिलाल यादव